ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 19 अंक 49 कुल पृष्ठ-8 29 जनवरी से 04 फरवरी, 2026 दयानन्दाब्द 201 सृष्टि सम्वत् 1960853126 सम्वत् 2082 मा. शु.-11

दयानन्द भवन समिति द्वारा संस्थापित एवं श्रीमद्दयानन्द वेदार्ष महाविद्यालय न्यास संचालित श्रीमद्दयानन्द वेद विद्यालय (गुरुकुल मलकपेट) भाग्यनगर (हैदराबाद) तेलंगाना का चतुर्थ वार्षिकोत्सव एवं अभिनन्दन समारोह व विश्व शांति अखण्ड सामवेद पारायण महायज्ञ दिनांक 24 व 25 जनवरी, 2026 (शनिवार व रविवार) को धूमधाम के साथ हुआ सम्पन्न

सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी एवं श्रीमद्दयानन्द वैदिक गुरुकुल परिषद् के अध्यक्ष स्वामी प्रणवानन्द जी का आशीर्वाद तथा सार्वदेशिक सभा के मंत्री एवं आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश+तेलंगाना के प्रधान प्रो. विट्ठलराव आर्य जी का रहा सान्निध्य

गुरुकुल निगम नीडम के अध्यक्ष स्वामी चिदानन्द सरस्वती यज्ञाध्यक्ष तथा आचार्य योगेन्द्र याज्ञिक गुरुकुल नर्मदापुरम (होशंगाबाद) रहे यज्ञ ब्रह्मा

दयानन्द भवन समिति के अध्यक्ष श्री सुधाकर गुप्ता जी रहे मुख्य यजमान

आचार्य डॉ. धनंजय जी मुख्य संयोजक एवं श्री हरिकिशन वेदालंकार जी रहे मुख्य व्यवस्थापक

आर्य समाज के इतिहास में हैदराबाद सत्याग्रह का विवरण स्वर्णाक्षरों में अंकित है। उसी ऐतिहासिक भूमि एवं सत्याग्रहियों की तपःस्थली भाग्यनगर (हैदराबाद) में श्रीमद्दयानन्द वेदार्ष महाविद्यालय न्यास, नई दिल्ली द्वारा संचालित श्रीमद्दयानन्द वेद विद्यालय (गुरुकुल मलकपेट) भाग्यनगर (हैदराबाद) तेलंगाना का चतुर्थ वार्षिकोत्सव दिनांक 24 व 25 जनवरी, 2026 (शनिवार व रविवार) को भव्यता के साथ आयोजित हुआ। इस अवसर पर विविध कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये। जिनमें मुख्य रूप से विश्व शांति अखण्ड सामवेद पारायण महायज्ञ (सूर्योदय से सूर्यास्त पर्यन्त), आयुष्काम महायज्ञ एवं अभिनन्दन समारोह, ध्वजारोहण एवं गुरुकुल महोत्सव आदि प्रमुख थे। इस दो दिवसीय कार्यक्रम में सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी एवं श्रीमद्दयानन्द वैदिक गुरुकुल परिषद् के अध्यक्ष एवं वेदार्ष न्यास के आचार्य स्वामी प्रणवानन्द जी, गुरुकुल निगम नीडम के आचार्य स्वामी चिदानन्द सरस्वती (आचार्य उदयन), सार्वदेशिक सभा के मंत्री एवं आर्य प्रतिनिधि सभा तेलंगाना+आन्ध्र प्रदेश के प्रधान प्रो. विट्ठलराव आर्य जी, पं. धर्मपाल शास्त्री (काशीपुर, उत्तराखण्ड), माता निर्मला योग भारती–हैदराबाद, डॉ. धर्मेन्द्र कुमार–दिल्ली, श्री रामपाल शास्त्री–कार्यकारी अध्यक्ष मानव सेवा प्रतिष्ठान, डॉ. रविन्द्र कुमार–हरिद्वार, आचार्य जयकुमार–गुरुकुल मंझावली, हरियाणा, आचार्य चन्द्रभूषण–गुरुकुल पौंधा, देहरादून, आचार्या सविता–कन्या गुरुकुल हैदराबाद, आचार्य सत्येन्द्र कुमार–परली बैजनाथ, महाराष्ट्र, श्री धनंजय जातवेदा, ब्र. मुरली आर्य, पं. हरिकिशन वेदालंकार, डॉ. निखिल आर्य–दिल्ली, आचार्य जितेन्द्र पुरुषार्थी, आचार्य रत्नदेव–सोनीपत, सार्वदेशिक आर्य वीरदल के पूर्व संचालक श्री सत्यवीर आर्य, श्री शिवदेव आर्य–गुरुकुल पौंधा, श्री नरदेव यजुर्वेदी–हालैण्ड, डॉ. शारदा–कन्या गुरुकुल कूचापाली, श्री अनन्त शास्त्री–गुरुकुल नरसिंहनाथ, उड़ीसा, आचार्य हीरा प्रसाद शास्त्री–दिल्ली आदि की गरिमामयी उपस्थिति रही।

कार्यक्रम का शुभारम्भ 24 जनवरी, 2026 को प्रातः 7 बजे विश्व शांति अखण्ड सामवेद पारायण महायज्ञ के रूप में प्रारम्भ हुआ। सूर्योदय से सूर्यास्त तक निरन्तर चले इस यज्ञ की अध्यक्षता स्वामी चिदानन्द सरस्वती जी ने की तथा ब्रह्मा पद को युवा विद्वान प्रखर वक्ता आचार्य योगेन्द्र याज्ञिक ने सुशोभित किया। उनके अतिरिक्त डॉ. धर्मेन्द्र कुमार–दिल्ली, आचार्या सविता–हैदराबाद ने भी बीच–बीच में प्रवचनों के द्वारा याज्ञिकों को प्रेरित किया। सायं सूर्यास्त के समय विश्व शांति यज्ञ की पूर्णाहुति हुई तथा सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी व प्रो. विट्ठलराव आर्य जी के संक्षिप्त उद्बोधन व ब्रह्मचारियों के भजनों का कार्यक्रम रहा।

25 जनवरी, 2026 को प्रातः 7 बजे से आयुषकाम यज्ञ प्रारम्भ हुआ जिसमें वीतराग संन्यासी स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी के उत्तम स्वास्थ्य एवं दीर्घायुष्य जीवन की कामना के साथ आहुतियाँ प्रदान की गई। इस अवसर पर दयानन्द भवन समिति के प्रधान आर्यश्रेष्ठी श्री सुधाकर गुप्ता जी को भी उनके जन्म दिवस के उपलक्ष्य में विशेष आहुतियाँ प्रदान कर उनकी दीर्घायुष्य, उत्तम स्वास्थ्य, सुख–समृद्धि एवं यश–कीर्ति की कामना की गई और उन्हें विशेष बधाई भी दी गई। इसके उपरान्त स्वामी आर्यवेश जी एवं स्वामी प्रणवानन्द जी के कर–कमलों द्वारा ध्वजारोहण कराया गया। तत्पश्चात् मुख्य मंच से अभिनन्दन समारोह का कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। इस समारोह की अध्यक्षता श्री सुधाकर गुप्ता जी ने की। सर्वप्रथम स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती का अभिनन्दन प्रारम्भ हुआ। पूर्ण वैदिक विधि से मंगलाचरण एवं सभी प्रक्रियाएं पूरी करते हुए महाराष्ट्र गुरुकुल स्नातक परिषद् के सदस्यों ने स्वामी जी को क्षत्रपति शिवाजी की एक ताम्र प्रतिमा एवं 3 लाख 51 हजार रुपये की राशि भेंट की। स्नातक परिषद् की ओर से संस्कृत भाषा में लिखित एक अभिनन्दन पत्र भी समर्पित किया गया। इसी क्रम में गुरुकुल पौंधा के स्नातक एवं युवा विद्वान् डॉ. रविन्द्र कुमार ने संस्कृत भाषा में लिखित अभिनन्दन पत्र भेंट किया और अपने संस्मरण सुनाते हुए कृतज्ञता व्यक्त की। अभिनन्दन के इस क्रम में आर्य प्रतिनिधि सभा तेलंगाना+आन्ध्र प्रदेश के प्रधान प्रो. विट्ठलराव आर्य एवं सभा के मंत्री श्री हरिकिशन वेदालंकार ने एक लाख रुपये की राशि व शॉल भेंटकर स्वामी प्रणवानन्द जी का स्वागत किया। प्रो. विट्ठलराव आर्य जी ने स्वामी प्रणवानन्द जी के सम्बन्ध में अपने

शेष पृष्ठ 4 पर

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

विस्मृत महर्षि दयानन्द

– महात्मा चैतन्यमुनि

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का इस धरा पर जब जन्म हुआ उस समय चारों ओर पाखण्ड और आडम्बर फैला हुआ था। लोग धर्म के स्वरूप को भूल चुके थे, एक परमात्मा के स्थान पर पत्थरों और व्यक्तियों की पूजा हो रही थी। आर्यों के आलस्य और प्रमाद के कारण वेद का पढ़ना–पढ़ाना तथा सुनना–सुनाना लुप्त हो गया था। मातृशक्ति को पढ़ने–पढ़ाने का अधिकार नहीं था। छुआछूत का कोढ़ समाज को जर्जर कर रहा था। भारत मां परतन्त्रता की बेड़ियों में जकड़ी हुई थी। हिन्दू लोग धड़ाधड़ विधर्मी बनकर राष्ट्र–भक्ति से विमुख हो रहे थे। मृतप्राय समाज एवं राष्ट्र को संजीवनी पीलाने वाला कोई नहीं था। इन समस्त बुराईयों से लड़ना तो दूर रहा इन्हें समूल नष्ट करने की कल्पना तक करने वाला भी कोई नहीं था। ऐसे विकट समय में महर्षि जी ने समूल सुधार का बीड़ा उठाकर अनुपम साहस का परिचय दिया। गुरु विरजानन्द जी को अपना समूचा जीवन समर्पित करने के बाद उन्होंने स्थान–स्थान पर जाकर शास्त्रार्थ किए अनेकों प्रवचन दिए तथा व्यक्तिगत रूप से भेंटे करके अनेक लोगों का पथ–प्रदर्शन किया। यही नहीं उन्होंने सत्यार्थ–प्रकाश, संस्कार–विधि, आर्याभिविनय, गोकरूणानिधि, ऋग्वेदादिभाष्य–भूमिका, व्यवहारभानु आर्योद्देश्य–रत्नमाला, पंचमहायज्ञ विधि आदि अनेक अद्भुत ग्रन्थों की रचना की।

टंकारा की धरती को त्यागते समय उनके दो ही सपने थे सच्चे शिव को प्राप्त करना तथा मृत्युजंयी बनना। इन लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए उन्होंने घोर तपस्या करके योग की अनेकों सिद्धियां प्राप्त की मगर वे इतने लोकेषणा रहित थे कि अपनी यौगिक सिद्धियों का कहीं पर भी किसी प्रकार का प्रदर्शन आदि नहीं किया। वे आदित्य ब्रह्मचारी थे। उनके ब्रह्मचर्य बल का लोगों ने कई बार प्रत्यक्ष साक्षात्कार किया। संसार में और भी अनेकों ब्रह्मचारी हुए मगर हनुमान जी ने श्रीराम की सेवा करने के लिए ब्रह्मचर्य का व्रत धारण किया। परशुराम ने इक्कीस बार क्षत्रियों का संहार करने के लिए, भीष्म ने अपने पिता की तुच्छ कामना को पूरा करने के लिए ब्रह्मचर्य का व्रत धारण किया मगर महर्षि जी ने अपने गुरु की आज्ञा मानकर संसार के उपकार के लिए यह व्रत धारण करके आर्ष ग्रन्थों के प्रचार–प्रसार तथा समाज और राष्ट्र–सेवा के लिए अपना समूचा जीवन आहुत कर दिया। उन्हें जीवन में एक क्षण के लिए भी कामवासना उद्वेलित नहीं कर पाई वे सत्यवादी थे। उनके जीवन में कितनी ही बार कितने ही प्रलोभन आए मगर वे कभी भी असत्य के पक्षधर नहीं बनें। प्रभु भक्त होने के कारण उनमें अद्भुत सहनशक्ति तथा निर्भीकता थी, वे दयालुता तथा परोपकार की साक्षात् मूर्ति थे। मानव तो मानव उनसे किसी पशु का दर्द भी नहीं देखा जाता था। जीवन भर अपने साथ अपकार करने वालों को सदा क्षमा ही करते रहे। यहां तक कि अन्त में जिस जगन्नाथ नामक व्यक्ति ने जहर दिया, संसार से प्रयाण करने से पूर्व उसे भी अपने पास से धन देकर नेपाल की ओर भाग जाने की प्रेरणा दी ताकि वह पकड़ा न जा सके। वे सच्चे समाज सुधारक थे। उन्हीं की प्रेरणा से महिलाओं के लिए विद्या ग्रहण करने के दरवाजे खुले। वे ही अछूतों को उनके अधिकार व सम्मान दिलाने वाले थे। उन्होंने सतीप्रथा तथा बालविवाह और बलिप्रथा आदि कुप्रथाओं का प्रबल विरोध किया तथा विधवा विवाह का समर्थन किया। पाखण्ड और आडम्बरों को जड़–मूल से उखाड़ने के लिए उन्होंने स्वयं को पूर्णतः झोंक दिया। वे पहले व्यक्ति थे जिन्होंने धर्म को आचरण के साथ जोड़ने की बात कहीं अन्यथा धर्म मात्र बाहरी पहरावे और चिन्ह आदि धारण करने तक ही सीमित हो गया था। उन्होंने जिस सामाजिक सुधार का मार्ग प्रशस्त किया था, उसे आगे बढ़ाने के लिए उनके शिष्यों ने अपने आपको आहुत कर दिया तथा पण्डित लेखराम, स्वामी दर्शनानन्द, पण्डित गुरूदत्त आदि अन्य अनेक मनीषियों ने अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया। महर्षि जी ने प्राचीनतम शिक्षा पद्धति के जो सूत्र प्रस्तुत किए थे उन्हें कार्यान्वित करने के लिए स्वामी श्रद्धानन्द तथा महात्मा हंसराज आदि ने सहर्ष अपने आप को होम कर दिया। आर्य समाज का ऐसा स्वर्णयुग आया कि इस संस्था ने चारों ओर अपने कार्यो की धूम मचा दी तथा आर्यसमाज व आर्यो के नाम एक आदर्श के रूप में लिए जाने लगे।

उन्होंने लोगों को पुनः परमात्मा के ज्ञान अर्थात् वेदों की ओर लौटने का न केवल आह्वान किया बल्कि अपने प्रबल तर्कों और प्रमाणों के आधार पर वेदों को परमात्मा द्वारा दिया गया ज्ञान भी सिद्ध किया। वेद के नाम पर जो कुछ भी अनर्गल व अप्रासंगिक हो रहा था, अपने वेद–भाष्य के द्वारा उन सब आक्षेपों का निराकरण कर दिया। निरूक्त के आधार पर वेदों का पारमार्थिक और व्यवहारिक पक्ष रखकर वेद के सम्बन्ध में प्रचलित समस्त भ्रान्तियों को दूर करने का ऐतिहासिक कार्य किया। यह सिद्ध करके बता दिया कि वेद में बहुदेवता वाद, लौकिक इतिहास तथा अप्रासांगिक एवं अनित्य विनियोग वाद नहीं है। अज्ञानी लोगों को बताया कि वेद ईश्वरीय ज्ञान है इसलिए उनका अर्थ परमात्मा के गुण–कर्म–स्वभाव के विपरीत नहीं किया जाना चाहिए, वह सृष्टि–नियम के विरुद्ध नहीं होना चाहिए, वह मानव उन्नति में सहयोगी होना चाहिए, वह अनुकूल, तर्कानुमोदित, बुद्धिसंगत होना चाहिए। उन्होंने वेदों को समझने की जो आंख दी उससे वेद निन्दक भी वेदों को गडरियों के गीत कहना छोड़कर प्राचीनतम ग्रन्थ, समस्त ज्ञान–विज्ञान का पुस्तक तथा ईश्वरीय ज्ञान कहने को बाधित हुए। उन्होंने स्पष्ट शब्दों में घोषणा की कि वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। इस सम्बन्ध में प्रसिद्ध क्रान्तिकारी अरविन्द घोष जी ने कहा–'वेदों के रहस्यों को खोलने की सही कुंजी यदि किसी के पास थी तो वह केवल दयानन्द के पास थी..... वेदों में विज्ञान की ऐसी बातें भी हैं जिनका पता आज के वैज्ञानिकों को नहीं..... दयानन्द ने वेदों में निहित ज्ञान के विषय में अत्युक्ति नहीं बल्कि अल्पोक्ति से काम लिया है.'

महर्षि जी में राष्ट्र–भक्ति कूट–कूट कर भरी हुई थी। अठराह सौ सत्तावन को प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम में उन्होंने अपनी सक्रिय भूमिका निभाई थी इस बात के आज कितने ही प्रमाण मिल रहे हैं। कुछ कारणों से वह क्रान्ति सफल नहीं हो सकी मगर वे उससे निरूत्साहित नहीं हुए बल्कि उन कारणों को खोजा जिनके कारण वह असफलता मिली थी और उन कारणों को दूर करने के लिए कृत–संकल्प हो गए। वे निर्भीक शब्दों में स्वतन्त्रता की मांग करने वाले प्रथम व्यक्ति थे। उन्होंने ही सर्वप्रथम अपने ग्रन्थ सत्यार्थ–प्रकाश में स्वराज्य की बात कही, अनेक ग्रन्थों में विदेशी राज्य के समूल नाश की कामनाएँ की तथा अंग्रेज अधिकारी के मुंह पर ही स्पष्ट शब्दों में कह दिया कि मैं तो परमात्मा से रात–दिन यह प्रार्थना करता हूँ कि मेरे राष्ट्र को विदेशी राज्य से शीघ्र मुक्ति मिले। सभी समाज सुधारकों तथा अग्रणी नेताओं ने इस बात को स्वीकारा है कि स्वतन्त्रता के प्रथम प्रणेता तथा राष्ट्रीय चेतना के अग्रदूत महर्षि दयानन्द जी ही थे। यह बात अक्षरशः सत्य है कि यदि उन्होंने अपने देश वासियों को स्वराज्य प्राप्त करने की प्रेरणा न दी होती तथा आर्य समाज की स्थापना न की होती तो भारत पन्द्रह अगस्त, १९४७ को स्वतन्त्र न हो पाता। आर्य समाज एक ऐसी क्रान्ति बनकर उभरा कि आर्य समाजी होने का अर्थ ही होता था– क्रान्तिकारी। बाल गंगाधर तिलक जी के शब्द है कि स्वतन्त्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है यह प्रेरणा उन्हें सत्यार्थ–प्रकाश से मिली। जिन लाला लाजपत राय ने स्वतन्त्रता के लिए स्वयं को आहुत कर दिया उनके शब्द है– 'आर्य समाज मेरी धर्म की मां और महर्षि दयानन्द मेरे धर्म पिता हैं।' उनकी शहीदी पर जिन क्रान्तिकारियों ने इस हत्या का बदला लेने की प्रतिज्ञा की तथा उस जालिम को मौत के घाट उतारा जिसने लाला जी पर लाठियाँ बरसाई थीं, उनमें भगतसिंह प्रमुख थे। भगत सिंह जी का पूरा परिवार सरदार अर्जुन सिंह, किशन सिंह, अजीत सिंह आदि महर्षि जी की राष्ट्रवादी विचारधारा के कारण ही क्रान्तिकारी बना था। अनेक क्रान्तिकारियों के प्रेरणा स्रोत पण्डित रामप्रसाद बिस्मिल जी अपनी आत्मकथा में लिखते है कि सत्यार्थ–प्रकाश ने ही उन्हें क्रान्तिकारी बनाया। चन्द्रशेखर आजाद आपके ग्रन्थ आर्याभिविनय का जब तक पाठ नहीं कर लेता था वह प्रातराश नहीं करते थे। यही नहीं बल्कि उन्हीं के परम शिष्य पण्डित श्यामजी कृष्ण वर्मा ने विदेश जाकर 'भारत–भवन' की स्थापना की थी जहां वीर सावरकर, मदल लाल ढींगरा, लाला हरदयाल आदि इनके शिष्य बनें तथा विदेश में भी क्रान्ति की ज्वाला को प्रज्ज्वलित रखा। भाई परमानन्द तथा भाई बालमुकुन्द आदि अन्य अनेकों क्रान्तिकारियों का प्रेरणा–स्रोत भी आर्य समाज ही था। उन्होंने स्वयं बोध प्राप्त करके संसार को परमात्म–बोध दिया। आत्म–बोध, मानव–बोध, समाज–बोध, वेद–बोध, कर्म–बोध, धर्म–बोध, शिक्षा–बोध, साहित्य–बोध, भाषा–बोध, अर्थ–बोध, विज्ञान–बोध तथा राष्ट्र–बोध दिया। श्री अरविन्द जी ने इसीलिए पहाड़ों की चोटियों से तुलना करते हुए महर्षि जी को सर्वोच्च शिखर की उपमा दी है। वास्तविकता यह है कि उनकी किसी से तुलना ही नहीं की जा सकती है क्योंकि वे अतुलनीय है.....

महर्षि जी ने अपनी विद्वता या योग का प्रदर्शन नहीं किया, न ही किसी नए मत या सम्प्रदाय की स्थापना की, न कोई नया गुरुमन्त्र ही दिया और न ही किसी नई पूजा पद्धति का विधान किया। उन्होंने स्पष्ट शब्दों में कहा कि मेरा कोई भी नया मत या सम्प्रदाय स्थापित करने की कोई इच्छा नहीं है और न ही मैंने अपनी ओर से कोई बात कही है बल्कि ब्रह्मा से लेकर जैमिनी मुनि तक ऋषि–मुनियों ने वेदानुसार जिन मान्यताओं को माना है उसी को लोगों के सामने रखा है क्योंकि अपने आलस्य, प्रमाद तथा एषणाओं के कारण लोग उन मान्यताओं को भूल चुके थे। हालांकि उनकी इच्छा किसी नई संस्था की स्थापना करने की भी नहीं थी मगर लोगों के आग्रह पर 'आर्य समाज' की स्थापना की और संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य बताया अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना तथा इस उन्नति का आधार वेदों को ही माना। उन्होंने आर्य समाज के जो दस नियम बनाए वे संसार के इतिहास में अद्वितीय ही नहीं बल्कि अनुपम भी है। उन नियमों के रहते कोई भी इस संस्था पर उंगली नहीं उठा सकता है। उप–नियमों के रूप में संस्था को सुचारू रूप से चलाने के लिए ऐसे सूत्र दिए जिनका अक्षरशः अनुपालन करने से आर्य समाज कभी भी अधोगति को प्राप्त नहीं हो सकता। यही कारण है कि जब तक चरित्र को प्रमुखता दी गई तथा नियमों और उपनियमों का भली प्रकार से कार्यान्वयन होता रहा, आर्य समाज ने अभ्युदय के व्योम् को छू लिया मगर आज स्थिति कुछ विपरीत है। हालांकि आज भी बहुत से आर्य समाजी ऐसे है जो पूर्णरूप से महर्षि जी के मन्तव्यों को सकारता देने में लगे हुए है मगर इस सत्य को भी स्वीकारना होगा कि आज अधिकतम समाजों में महर्षि जी के नियमों–उपनियमों का अनुपालन नहीं हो रहा है। इस समाज का सदस्य बनने के लिए जिस सदाचार को आधार बनाया गया था। आज उसका कोई महत्व नहीं रहा है, साधारण सदस्यों और सभासदों के लिए जो नियम बनाए गए थे, उन्हें मानने वाला नहीं रहा, उपस्थिति रजिस्टर का प्रयोग या तो किया ही नहीं जाता और यदि किया जाता है तो केवल अपने गुट को शक्तिशाली बनाने के लिए, शतांश देने की बात कोई भी मानने के लिए तैयार नहीं। आश्चर्य तो यह है कि ऐसे आचारहीन तथा नियम–उपनियमों का उल्लंघन करने वाले लोग ही अपने आपको सच्चे आर्य कहने लगे हैं तथा जो महर्षि जी के सदाचार एवं नियम–उपनियमों की बात करता है उसे बाहर का रास्ता दिखा दिया जाता है। उस विशुद्ध आर्य को परे हटाने के लिए ये तथाकथित आर्य संगठित हो जाते हैं। इसका दुष्परिणाम यह हुआ कि बहुत सी सभाओं, आर्य समाजों तथा उससे सम्बन्धित अन्य संस्थाओं तथा सम्पतियों पर गैर आर्यो का अधिपत्य हो गया है..... वोट की राजनीति के अन्तर्गत या 'सबको जोड़कर चलो' के नाम पर बड़े–बड़े अनुशासनहीनों असत्यवादियों तथा घपला करने वालों का पक्ष लेने वाले तो बहुमत में मिल जायेंगे मगर सत्य और सदाचारी का साथ देने वाला कोई विरला ही बचा है। इससे सच्चे आर्य अन्ततः उपराम होते जा रहे है क्योंकि आचारहीन, आध्यात्मिकशून्य, मूर्ख व्यक्ति तथा आर्य समाजों के मन्तव्यों से पूर्णतया अनभिज्ञ व्यक्तियों द्वारा कब तक अपमानित हुआ जा सकता है..... उनके उपराम होने से स्वार्थी तथा पद्लोलुप व्यक्ति प्रसन्न ही होते हैं शर्मिन्दा नहीं। इस प्रक्रिया के चलते बहुत सी सभाओं या आर्य समाजों पर दुराचारी, असत्यवादी तथा अपनी–अपनी एषणाओं को परितृप्त करने वाले अनार्यो का अधिपत्य होता जा रहा है..... जिसके कारण महर्षि जी द्वारा चलाई गई प्रचार–प्रसार की प्रक्रियाएँ शिथिल तथा दिशाहीन हुई है.... भले ही दिख रहा हो कि हम बढ़ रहे है, हम कार्य कर रहे है मगर ऐसे लोग संभवतः नींव से हटकर बनाए गए भवन का हश्र नहीं जानते हैं या अपने–अपने स्वार्थो की पट्टी बान्धने के कारण जानना नहीं चाहते हैं। ऐसे स्वार्थी लोगों का तो कुछ बिगड़ने वाला नहीं है मगर महर्षि दयानन्द जी को विस्मृत करने के कारण आर्य समाज की गरिमा पर ठेस पहुँची है तथा अन्ततः हम ऐसे पतन के मार्ग पर चल पड़े हैं जिसका अन्त केवल और केवल विनाश है.....

यह लघु लेख न तो किसी व्यक्ति विशेष, न किसी विशेष सभा या आर्य समाज को लक्ष्य लेकर लिखा गया है बल्कि इसका लक्ष्य है कि हम महर्षि दयानन्द जी के अनुयायी आत्मान्वेषण तथा आत्मावलोकन करें कि महर्षि जी की क्या भावना थी और आज हम कहां आकर पहुँचे हैं। जहाँ तक महर्षि दयानन्द जी तथा आर्य समाज की उत्कृष्ट एवं सार्वभौमिक विचारधारा का प्रश्न है, आज यह विचारधारा अधिक प्रासांगिक है मगर देखना है कि हम प्रासांगिक रहे है या नहीं। कब तक हम आत्मावलोकन किए बिना इस प्रकार से रसातल को जाते रहेंगे..... एक समय वह भी था जब अंग्रेजी राज्य में आर्य समाजी की बात को प्रमाणिक माना जाता था मगर आज हम कहां खड़े हैं..... आर्य समाज में कराए गए विवाह को न्यायालय में भी प्रमाण माना जाता था मगर आज उस पर भी क्यों उंगलियाँ उठने लगी है.... क्यों? अपनी अकर्मण्यता, सिद्धान्तहीनता तथा आपसी तालमेल और सौहार्द के अभाव के कारण ही आज समाज व देश के लिए आदर्श बनना तो दूर रहा, हमारे पूर्व मनीषियों ने समाज व देश के लिए जो कुर्बानियाँ की हैं, देश व समाज के लिए जो सर्वाधिक काम किया है, राजनेताओं तथा भावी पीढ़ी में उसे दर्ज कराने तक में हम अक्षम हो गए है.... क्या इस पर चिन्तन करना अनिवार्य नहीं है? हमारा यह मानना है कि यदि महर्षि दयानन्द जी के आदेशों का अक्षरशः पालन किया जाए, गैर आर्य समाजियों की भीड़ बढ़ाने के स्थान पर सत्यवादी, सच्चरित्र एवं सिद्धान्तवादी लोगों को प्रश्रय दिया जाए, नियम–उपनियमों का दृढ़ता के साथ अनुपालन किया जाए तो आज भी हम अपने उस पुरातन गौरव को प्राप्त कर सकते हैं अन्यथा अन्य और कोई मार्ग नहीं है। कथनी और करनी जब तक एक नहीं होगी तब तक औरों की बात तो दूर रही ऐसे लोग अपने परिवार तक को भी आर्य समाजी नहीं बना पाते हैं मगर इसके विपरीत यदि स्वयं मन, वचन और कर्म से सिद्धान्तवादी बनेंगे तो इससे ही अपने परिवार और समाज के अन्य लोग भी आर्य समाज की ओर आकर्षित होंगे। इसी से हमारा संगठन शक्तिशाली बनेगा तथा हम सही अर्थो में राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अपना वर्चस्व स्थापित कर सकेंगे। यहां हम यह बात भी करना चाहते हैं कि आज भी संसार में आर्य समाज जैसी उत्कृष्ट संस्था और कोई नहीं है और न ही आर्य समाज में सिद्धान्तवादियों का अकाल है। आज भी महर्षि दयानन्द जी के बहुत से दीवानें समर्पित होकर अपने–अपने ढंग से कार्य कर रहे हैं..... वे किसी एषणा के कारण नहीं बल्कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के ऋण से उऋण होने के लिए तथा प्राणीमात्र के कल्याण की भावना और अपने जीवन को सार्थकता देने के लिए रात–दिन चुपचाप कार्यरत हैं..... उनके मानस पटल से महर्षि जी का महान व्यक्तित्व तथा उनके सिद्धान्त एक पल भर के लिए भी विस्मृत नहीं होते हैं तभी तो वे आज भी महर्षि जी द्वारा रखी गई नींव पर विशाल भवन बनाने के सपने को साकार करने में अनवरत् लगे हैं। महर्षि दयानन्द जी को विस्मृत करके चलना व्यक्ति, आर्य समाज, समूचे समाज तथा राष्ट्र और विश्व के लिए आत्मघाती कदम होगा इसलिए बोधोत्सव पर सर्वप्रथम उस महर्षि को ही आत्मसात् करें.....

वैदिक वशिष्ठ आश्रम (महर्षि दयानन्द धाम),
महादेव, तहसील सुन्दर नगर, मण्डी (हि०प्र०)

महर्षि के मौन उपदेश

– श्री इन्द्रदेव ''मेधार्थी'' गुरुकुल झज्जर

महर्षि दयानन्द जी महान् समाज सुधारक के साथ-साथ तत्वद्रष्टा महान् क्रांतदर्शी योगी भी थे। उन्होंने अपने मन्तव्यों को ग्रन्थों एवं व्याख्यानों द्वारा सीधे सरल शब्दों में सुस्पष्ट सबके समक्ष रख दिया है। जिनके धारण से आज लाखों मनुष्य स्वयं को महर्षि का ऋणी समझते हैं। पुनरपि ''अन्त भला सो भला'' उक्तयनुसार लोगों की यह जिज्ञासा होना स्वाभाविक है कि उस दिव्य आचार्य ने महाप्रयाण करते समय हमें क्या आदेश दिया। उनकी स्वयं की अवस्था मृत्यु समय कैसी थी। इस जिज्ञासा पूर्ति के लिये महर्षि के अन्तिम वचनों को पाठकों के समक्ष रखता हूँ।

महर्षि का प्रथम मौन उपदेश

यह तो पहले ही लिख चुका हूँ कि महर्षि कोरे सुधारक ही नहीं थे, अपितु वे वास्तविक रूप में ''सत्यं शिवं सुन्दरम्' के उपासक भी थे और उसी की प्रेरणा से उन्होंने यह सुधार का मार्ग अपनाया था। 1883 ई0 30 अक्टूबर का दिन संसार के इतिहास में अमर रहेगा। यह दिन दीपावली का था। भयंकर विषपान के कारण महर्षि महीनों से अति बीमार थे। आज 11 बजे से उनके श्वास की गति बहुत बढ़ गई थी। सारे शरीर पर विष के कारण छाले पड़े हुए थे, गला बैठ गया था, भयंकर कालकूट विष आदित्य ब्रह्मचारी के परिपुष्ट शरीर को जीर्ण-शीर्ण कर रहा था। श्री पं0 गुरुदत्त जी के साथ लाहौर से आये हुए लाला जीवनदास जी ने पूछा, महाराज! अब आप कहाँ हैं? इसके उत्तर में महर्षि ने कहा- ''ईश्वरेच्छा में।'' यह वाक्य सामान्य अथवा आकस्मिक वाक्य नहीं है। अपितु इससे महाराज की आन्तरिक स्थिति का स्पष्ट रूप से ज्ञान होता है। थोड़ी-थोड़ी देर में जब रोग का आक्रमण अति तीव्रता से होता, तब महर्षि अपनी वृत्ति को अभ्यान्तर कर लेते थे जिसे सामान्य लोग मूर्छा अवस्था मानते थे। किन्तु वास्तविक बात यह है कि सभी योगीजन जब शरीर, इन्द्रिय, मन आदि को नितान्त अशक्त समझते हैं, तब उससे संबन्ध तोड़कर ईश्वर मग्न हो जाते हैं, और ईश्वरेच्छा में आनन्द से रहते हैं, उन्हें उस समय शरीर के दुःखों का अनुभव नहीं होता। अतः ''मैं ईश्वरेच्छा'' में हूँ यह महर्षि का वाक्य उनकी ब्रह्मस्थिति का द्योतक है।

महर्षि का द्वितीय मौन उपदेश

इसके अतिरिक्त एक वाक्य और जो आज तक लोगों के लिए रहस्य का विषय बना हुआ है। महर्षि के देहावसान के एक घण्टा पूर्व पाँच बजे किसी भक्त ने पूछा, आप श्रीमानों का चित्त कैसा है? इस पर महर्षि ने कहा-अच्छा है, तेज और अन्धकार का भाव है। महर्षि के इस उत्तर का अभिप्राय निश्चित रूप से वहां कोई न समझ सका। किन्तु बाद में लोग अपनी-अपनी ऊहापोहानुसार इस प्रहेलिका का अर्थ लगाने लगे। जब वाक्य की ठीक संगति न लगी तब किसी ने कहा कि महर्षि को उस समय असह्य पीड़ा थी, भयंकर रोग से वे अचेत जैसे हो रहे थे। अतः यह वाक्य सन्निपात रोग में होने वाले प्रलाप के समान है। इसका कोई विशेष अर्थ सम्भव नहीं।

कुछ लोग कल्पना का सहारा लेकर आगे बढ़े और कहा, उस समय सूर्यास्त होने को था, अतः कुछ ही प्रकाश अवशिष्ट रह गया था। उधर रात्रि का अन्धकार भी भूमण्डल पर छा जाना चाहता था। इस दिन रात के संगम का ही वर्णन महर्षि ने इन शब्दों में (तेज और अन्धकार का भाव है) व्यक्त कर दिया। कुछ लोगों ने इसका अभिप्राय यह समझा कि उस दिन अमावस्या की घोर अन्धकारमय रात्रि थी, कृष्ण पक्ष की समाप्ति के साथ-साथ शुक्ल पक्ष का आरम्भ भी हो रहा था। अतः इस आकस्मिक कृष्ण शुक्ल पक्ष की सन्धि को ही महर्षि ने तेज अन्धकार के रूप में व्यक्त कर दिया। कुछ विचारक इससे भी आगे बढ़ते हैं और वे कहते हैं कि- उस समय वेदज्ञान के अभाव में सर्वत्र अज्ञान तिमिर फैला हुआ था। महर्षि के जीवन भर के पुरुषार्थ करने से कहीं-कहीं अन्धकार का नाश होकर ज्ञान रूपी तेज चमकने लगा था। महर्षि के जीवन की साध भी इसी अन्धकार विनाश के लिये थी। इसीलिए अन्तिम समय में भी अनायास भान हो आया। जिसे उन्होंने तेज और अन्धकार का भाव है इस रूप में व्यक्त किया। इस प्रकार महर्षि के इस वाक्य का अर्थ लोगों ने अपने-अपने विचार से भिन्न-भिन्न किया। उपर्युक्त सभी दृष्टिकोण बाह्य जीवन को मुख्य मानकर बनाये गये हैं। किन्तु महर्षि के जीवन का अध्ययन आन्तरिक दृष्टिकोण से ही ठीक हो सकता है। बिना उनकी आन्तरिक अवस्था समझे महर्षि को समझने का प्रयास व्यर्थ ही है। मेरे विचार से महर्षि के इस दिव्य वाक्य का अर्थ इस प्रकार से है- जैसे ज्वरग्रस्त रोगी को ज्वर समाप्त होने वाले दिन अधिक वेग से ज्वर आता है, उसी प्रकार यह प्रकृति का महर्षि पर आक्रमण था। अनादि काल से अथवा आरम्भ सृष्टि से चित्त जीवात्मा का सहयोगी आज्ञाकारी सेवक बना हुआ था। किन्तु आज इनके सम्मिलन का अंतिम दिन था। अब वह

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती

परस्पर 36 हजार बार सृष्टि बनने तक परस्पर सम्बन्धित न हो सकेंगे। मानो चित्त पूर्ण वेग के साथ सम्पूर्ण संस्कारों को आत्मा सम्मुख उपस्थित कर रहा है। किन्तु वह ज्ञानाग्नि से दग्ध होकर निर्जीव हो जाते हैं। आज यह अन्तिम अन्तर्द्वन्द्व था। इसलिए आन्तरिक चित्त के अन्तिम आक्रमण को देखकर महर्षि ने तेज और अन्धकार का प्रयोग किया। अन्त में तेज की विजय हुई, और महर्षि कृतकृत्य हो गये। इस प्रकार उन्होंने तेज और अन्धकार का भाव है इन शब्दों से अपनी आन्तरिक स्थिति का वर्णन किया।

महर्षि का तृतीय मौन उपदेश

मृत्यु समय से कुछ पूर्व महर्षि ने एक आदेश यह दिया था कि जो लोग हमारे साथ हैं अथवा दूरस्थ स्थानों से आये हैं वे सब मेरे पीछे आ जायें। जिसे सुनकर तत्रस्थ सब लोग उनके पीछे की ओर खड़े हो गये थे। किन्तु इसका अभिप्राय इतना ही नहीं था। वह तो, यावच्चन्द्रदिवाकरो की स्थिति तक के लिए आदेश दे रहे थे। और इस आदेश के सूक्ष्मता में यह रहस्य छिपा हुआ था कि मेरे शरीर त्याग के बाद तुम मेरे पीछे रहना। मेरे सिद्धान्तों का प्रचार करना और मिलकर रहना। ऋषि का यह आदेश आज हमारे लिए विशेष ध्यान देने योग्य है। वास्तव में आज हम उनके पीछे नहीं रहे। प्रत्येक क्षेत्र में हमारे साथ महर्षि के दृष्टिकोण का अभाव है। शिक्षा को ही लीजिये। कितने आर्य ऐसी निष्ठा रखते हैं जो अपनी संतान को निष्कारणषडङ्ग वेदों के विद्वान् बनाना चाहते हों। यही अवस्था सर्वत्र है। इस आदेश की उपेक्षा से ही हमारे समाज का तेज क्षीण होता जा रहा है। भगवान् हमें सच्चे अर्थों में महर्षि का अनुयायी बनने का सामर्थ्य प्रदान करे।

महर्षि का चतुर्थ मौन आदेश

स्वामी जी महाराज ने आर्यों के लिए एक आदेश यह भी दिया था कि ''सब खिड़की दरवाजे खोल दो'' जिसे सुनकर लोगों ने उस भवन के सब खिड़की, दरवाजे तथा छत के रोशनदान खोल दिये थे। परन्तु यह तो उन की आज्ञा का स्थूल रूप से ही पालन करना कहा जा सकता है। यह वाक्य स्थूल अर्थ के साथ एक सूक्ष्म अर्थ की ओर भी संकेत कर रहा है। अर्थात् महाभारत काल से आर्यों ने अपने हृदयों को संकीर्ण बना लिया है। जिसके कारण भारत के करोड़ों पुत्र अछूतों के रूप में ईसाई, मुसलमानों की भेंट चढ़ रहे हैं। आर्य (हिन्दू) उन्हें घृणा की दृष्टि से देखते हैं। परन्तु अब समय संभलने का आ गया है। अतः अपने हृदय के कपाट खोलकर सबको छाती से लगाने की आवश्यकता है। अपनी संकीर्ण मनोवृत्ति त्यागकर उदार वृत्ति अपना लेनी चाहिए। इस आदेश से आर्यसमाज ने मुसलमानों की शुद्धि का मार्ग प्रशस्त किया, लाखों भारतीय संस्कृति से कटे हुए लोगों को पुनः आर्य धर्म की दीक्षा दी। अतः हमें आचार्य के इस उदार दृष्टिकोण को अब भी सदैव अपनाये रहना चाहिए।

महर्षि का पाचवां मौन आदेश

दीपावली के दिन महर्षि का मुख-मण्डल अति दीप्त दिखाई दे रहा था। वे समाधि लगाए ईश्वर मग्न थे। अनायास ही महाराज ने आँखें खोलीं। चारों ओर गम्भीर दृष्टि से एक बार देखा। इस समय का दृष्य अपूर्व था। महाराज के मुख-मण्डल पर अनुपम छवि विराज रही थी। जिस प्रकार किसी प्रियतम से मिलने के लिए मनुष्य का हृदय उद्वेल्लित हो उठता है, उसी प्रकार ऋषि का अंग-प्रत्यंग पुलकित हो रहा था। वियोग-मृत्यु-भयानकता-दुःख चिन्ता घबराहट आदि के कोई लक्षण नहीं थे। इसके विपरीत वहाँ तो ब्रह्मचर्य पूर्वक आजीवन घोर तप से अर्जित पुण्य का फल मिल रहा था। जन्म-जन्म की आज साधना पूरी हो गई। माया का अन्त हो गया, योग-दर्शन में वर्णित सातों अवस्था उपस्थित हो गईं। अतः ऋषि अत्यधिक आनन्द विभोर थे। इस दृष्य ने लोगों को आश्चर्य में डाल दिया। उन्होंने प्राण छोड़ते समय मनुष्य को तड़पने, हाय-हाय करते हुए ही देखा था, प्राण कैसे छोड़ने चाहिएँ यह पाठ तो वे प्रथम बार ही अपने आचार्य से पढ़ रहे थे। इधर पंडित गुरुदत्त जैसे तार्किक अपनी नास्तिकता को छोड़कर अतीव श्रद्धा से अपने गुरु से आस्तिकता की मौन दीक्षा ग्रहण कर रहे थे। गुरुदत्त के लिए यह दृष्य क्रियात्मक उपदेश सिद्ध हुआ। अब तो जीवन की धारा ही बदल गई। महर्षि ने सहसा कहना आरम्भ किया- हे दयामय सर्वशक्तिमान ईश्वर तेरी इच्छा यही है, तेरी यही इच्छा है, तेरी इच्छा पूर्ण हो। आहा!!! तूने अच्छी लीला की।'' यह शब्द भी ऋषि के विशेष स्थिति के द्योतक हैं। ईश्वर प्राणिधान का यह उत्कृष्टतम उदाहरण है। महर्षि ब्रह्म में स्थित होने से वे ब्रह्म की इच्छा का ही मानो पालन कर रहे थे। उन्हें सब संसार ब्रह्म में डूबा हुआ दीख रहा था और वे स्वयं आनन्द मग्न थे। इस स्थिति का वर्णन वे किन शब्दों में करते। अतः उनके मुख से अनायास ही यह शब्द निकल पड़े- आहा!!! तूने अच्छी लीला की, तेरी इच्छा पूर्ण हो। इतना कह प्राण बाहर निकाल स्वयं ब्रह्मस्थ हो गये।

पृष्ठ 1 का शेष

दयानन्द भवन समिति द्वारा संस्थापित एवं श्रीमद्दयानन्द वेदार्ष महाविद्यालय न्यास संचालित श्रीमद्दयानन्द वेद विद्यालय (गुरुकुल मलकपेट) भाग्यनगर (हैदराबाद) तेलंगाना का

चतुर्थ वार्षिकोत्सव एवं अभिनन्दन समारोह व विश्व शांति अखण्ड सामवेद पारायण महायज्ञ

भाव प्रकट करते हुए उन्हें गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का प्रबल प्रवक्ता बताया। इसी प्रकार सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी तथा मंत्री प्रो. विट्ठलराव आर्य जी ने सभा की ओर से 51 हजार रुपये की राशि भेंटकर स्वामी प्रणवानन्द जी का सम्मान किया। स्वामी आर्यवेश जी ने स्वामी प्रणवानन्द जी के 50 साल पुराने संस्मरणों को प्रस्तुत करते हुए कहा कि ऐसे मजबूत संकल्प एवं आत्मबल का व्यक्तित्व विरला ही पैदा होता है। स्वामी प्रणवानन्द जी ने आर्य समाज के इतिहास में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान अंकित करा दिया है।

स्वागत की इस कड़ी में माता निर्मला योग भारती, डॉ. धर्मेन्द्र कुमार, पं. धर्मपाल शास्त्री आदि ने भी अपने विचार प्रस्तुत किये। इस अवसर पर गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने भी संस्कृत व अंग्रेजी में व्याख्यान, कविताएँ व श्लोक आदि प्रस्तुत कर श्रोताओं को मन्त्र मुग्ध कर दिया। ब्रह्मचारियों की प्रस्तुति अत्यन्त प्रभावशाली रही। कार्यक्रम के अन्त में दयानन्द भवन समिति के प्रधान व इस कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री सुधाकर गुप्ता जी ने पधारे हुए सभी विद्वानों, आचार्यों व संन्यासियों को शॉल, वस्त्र व दक्षिणा प्रदान कर सम्मानित किया। उन्होंने स्वामी प्रणवानन्द जी के सम्मान में अपने हृदय के उद्गार प्रकट करते हुए कहा कि स्वामी जी ने दयानन्द भवन समिति के इस उपदेशक विद्यालय को श्रीमद्दयानन्द वेद विद्यालय के रूप में पुनः प्रारम्भ करके मेरे उद्देश्य को पूर्ण किया है इसलिए मैं उनका हृदय से आभारी हूँ। मेरी प्रबल इच्छा थी कि इस संस्था में वेदों की शिक्षा प्रारम्भ की जाये। जिसे स्वामी जी ने पूरा करके दिखाया है। इस पूरे कार्यक्रम का कुशल संयोजन और सम्पूर्ण

व्यवस्था का समन्वय इस गुरुकुल के मुख्य प्रभारी डॉ. आचार्य धनंजय जी ने किया और उन्होंने सभी आगन्तुक महानुभावों का हार्दिक धन्यवाद ज्ञापित किया।

इस अवसर पर दिल्ली, हरियाणा व उत्तर प्रदेश से भी आर्य समाज के कार्यकर्ता व माताएँ, बहनें भी बड़ी संख्या में पधारे हुए थे। मानव सेवा प्रतिष्ठान के सभी पदाधिकारी सर्वश्री आचार्य चन्द्रदेव शास्त्री, श्री रामपाल शास्त्री, आचार्य हरवीर शास्त्री, श्री सोमदवे शास्त्री व श्री बलजीत सिंह सहरावत आदि भी कार्यक्रम में उपस्थित रहे। सार्वदेशिक आर्य वीरदल के पूर्व संचालक श्री सत्यवीर आर्य व उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सविता आर्या जी भी विशेष रूप से कार्यक्रम में सम्मिलित हुए। दयानन्द वेद विद्यालय मलकपेट के व्यवस्थापक ब्र. एस. वेद मित्र, श्री संजय कुमार, श्री निशान्त, श्री ओंकार आदि ने उत्सव की व्यवस्थाओं में अपना पूरा योगदान दिया। दयानन्द भवन समिति के मंत्री श्री के0 रघुवीर, कोषाध्यक्ष श्री टी0 चक्रपाणी, श्री नरसिम्हा आदि का भी विशेष योगदान रहा। कार्यक्रम में भोजन एवं आवास की सुन्दर व्यवस्था की गई थी। संयोग की बात है कि 25 जनवरी को दो दिवसीय वार्षिकोत्सव भव्यता के साथ सम्पन्न होने के बाद 26 जनवरी को गणतन्त्र दिवस एवं श्री सुधाकर गुप्ता जी की सुपुत्री के जन्मदिन का भी एक विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें नगर के सैकड़ों गणमान्य लोगों ने भाग लेकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। 26 जनवरी को प्रातः 7 बजे सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने राष्ट्रध्वज तिरंगा फहराकर गुरुकुल के प्रांगण में गणतन्त्र दिवस समारोह का शुभारम्भ किया। वैदिक राष्ट्रीय प्रार्थना एवं राष्ट्रगान भी इस अवसर पर गाये गये। तत्पश्चात् यज्ञ किया गया। इसी प्रकार सायं 5 से 7 बजे तक श्री सुधाकर गुप्ता जी की बेटी व उनका जन्मोत्सव यज्ञ के द्वारा प्रसन्नता के साथ मनाया गया। यज्ञ के उपरान्त स्वामी प्रणवानन्द जी, स्वामी आर्यवेश जी व प्रो0 विट्ठलराव आर्य जी ने श्री गुप्ता जी को अपने आशीर्वाद एवं शुभकामनाओं द्वारा उनके जीवन की उन्नति एवं दीर्घायुष्य की कामना की। श्री गुप्ता जी को नगर के गणमान्य लोगों ने शॉल, स्मृति चिन्ह आदि देकर सम्मानित किया। कार्यक्रम के पश्चात् गुप्ता परिवार की ओर से स्वादिष्ट भोज की व्यवस्था की गई थी जिसमें सभी लोगों ने भाग लिया। कार्यक्रम बड़े उत्साह और उल्लास के साथ सम्पन्न हुआ।

चौधरी सुरेन्द्र सिंह बरवाला, पूर्व सांसद एवं पूर्व मंत्री हरियाणा सरकार के बड़े भाई चौधरी बृजेन्द्र सिंह ढांढा पूर्व सरपंच ग्राम–संगतपुरा, जिला–जीन्द का देहावसान

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी हुए शोक सभा में सम्मिलित

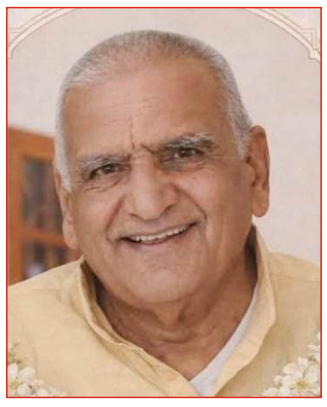

पूर्व सांसद एवं हरियाणा सरकार के पूर्व मंत्री चौ. सुरेन्द्र सिंह बरवाला के बड़े भाई चौ. बृजेन्द्र सिंह ढांढा का गत् दिनों देहावसान हो गया। उनकी शोक सभा में 16 जनवरी, 2026 को सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी आदित्यवेश जी, श्री सज्जन सिंह राठी व श्री अशोक आर्य विशेष रूप से सम्मिलित हुए। चौ0 बृजेन्द्र सिंह ढांढा, ग्राम–संगतपुरा, जिला–जीन्द से सरपंच रहे, ब्लॉक समिति से सदस्य रहे और बहुत ही प्रतिष्ठित समाजसेवी थे। उनकी स्मृति में उनके निवास 'टीकराम भवन' पटियाला चौक, जीन्द में विशाल श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया जिसमें आध्यात्मिक प्रवचन के लिए सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी को आमंत्रित किया गया था। विदित हो कि श्री बृजेन्द्र सिंह जी के छोटे भाई चौ. सुरेन्द्र सिंह बरवाला जो हरियाणा सरकार में दो अलग–अलग विभागों के मंत्री रहे और लोकसभा के सदस्य भी रहे। वे स्वामी आर्यवेश जी के सहपाठी हैं। कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में स्वामी जी और श्री सुरेन्द्र सिंह बरवाला ने एल.एल.बी. की डिग्री प्राप्त की थी और वे परस्पर अत्यन्त मित्र रहे। श्री सुरेन्द्र सिंह जी ने स्वामी जी सम्पर्क करके श्रद्धांजलि में अपना अध्यात्मिक प्रवचन देने और परिवारजनों को जीवन और मृत्यु के रहस्य को समझाने तथा उन्हें इस दुःख की घड़ी में ढांढस बंधाने के लिए आमंत्रित किया था। इस श्रद्धांजलि सभा में अनेक राजनेता एवं सामाजिक कार्यकर्ता सम्मिलित हुए। हजारों की संख्या में उपस्थित श्रद्धांजलि सभा को स्वामी आर्यवेश जी ने लगभग 45 मिनट तक सम्बोधित किया और दिवंगत आत्मा को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए परिवारजनों को सांत्वना दी। स्वामी जी ने वेद मंत्रों एवं गीता के श्लोकों के माध्यम से जीव की नश्वरता और परमात्मा की व्यवस्था को सरल शब्दों में समझाया। इस श्रद्धांजलि सभा का संयोजन श्री महिपाल सिंह शास्त्री ने किया। सभा में कांग्रेस के युवा सांसद श्री दीपेन्द्र हुड्डा, श्री जय प्रकाश (जे0पी0), विधायक श्री जस्सी पेटवाड़, पूर्व विधायक श्री सुभाष गांगोली, विधायक श्री नरेश सेलवाल, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. राजवीर सिंह लोहान, श्री बलवान सिंह लोहान एडवोकेट–न्यूजीलैण्ड, श्री रणधीर सिंह रेढू एडवोकेट, श्री मुख्तियार सिंह एडवोकेट–साकरा आदि के अतिरिक्त अनेक गणमान्य नेता एवं कार्यकर्ता उपस्थित थे। श्री सुरेन्द्र सिंह बरवाला ने सभी आगन्तुक महानुभावों का धन्यवाद ज्ञापित किया। उनके भाई चौ0 दिलबाग सिंह ढांढा ने श्री वरुण सिंह ढांढा व श्री प्रशान्त सिंह ढांढा आदि के साथ, सभी आगन्तुक महानुभावों का आभार प्रकट किया।

आर्य समाज, 19 विधान सरणी, कलकत्ता का 140वाँ वार्षिकोत्सव समारोह भव्यता के साथ हुआ सम्पन्न

विशाल शोभा यात्रा के द्वारा जन-जन तक पहुँचाया आर्य समाज का संदेश

सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी की रही गरिमामयी उपस्थिति

वैदिक विद्वान् आचार्य योगेश भारद्वाज व आचार्य आनन्द पुरुषार्थी ने वैदिक सिद्धान्तों पर दिये प्रवचन

युवा भजनोपदेशक आर्य श्री संदीप गिल के भजनों की रही धूम

स्थानीय विद्वान् पुरोहितों ने किया सस्वर पाठ एवं प्रतिदिन बंग भाषा में प्रतिदिन एक सत्र का किया गया आयोजन

ऐतिहासिक आर्य समाज, 19 विधान सरणी, कोलकाता द्वारा आयोजित छः दिवसीय वार्षिकोत्सव (दिनांक 23 दिसम्बर से 28 दिसम्बर, 2025) कार्यक्रम भव्यता के साथ मनाया गया। इस अवसर पर विभिन्न सम्मेलनों, विचार गोष्ठियों एवं गुरुकुल ब्रह्मचारी एवं ब्रह्मचारिणियों द्वारा गीत, व्याख्यान एवं नाटिका प्रस्तुत किये गये। उत्सव के प्रथम दिन विशाल शोभा यात्रा का भी विशेष आयोजन किया गया। कार्यक्रम में विशेष रूप से दिल्ली से पधारे सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, युवा वैदिक विद्वान आचार्य योगेश भारद्वाज जी, आचार्य आनन्द पुरुषार्थी जी व युवा भजनोपदेशक आर्य श्री संदीप गिल आदि के व्याख्यान एवं भजनों का कार्यक्रम रहा।

इस छः दिवसीय उत्सव का शुभारम्भ अथर्ववेद पारायण यज्ञ से हुआ। यज्ञ के ब्रह्मा पद को आचार्य आनन्द पुरुषार्थी जी ने सुशोभित किया। ऋत्विक गण के रूप में पं. आत्मानन्द शास्त्री, पं. योगेश राज उपाध्याय, पं. कृष्णदेव शास्त्री, पं. वेदप्रकाश शास्त्री एवं पंडिता अर्चना शास्त्री जी आदि ने वेद पाठ किया। यज्ञ के मुख्य यजमान आर्य समाज के प्रधान श्री दीपक आर्य (प्रधान) एवं मंत्री श्री ध्रुवचन्द जायसवाल जी ने सपत्नीक उपस्थित होकर आहुतियाँ प्रदान की तथा अन्य गणमान्य महानुभावों ने भी सपरिवार यज्ञ में सम्मिलित होकर यजमान बनकर अपना योगदान प्रदान किया।

अपराह्न 2 बजे एक विशाल शोभायात्रा का आयोजन हुआ, जिसमें हजारों की संख्या में धर्मप्रेमी जन सम्मिलित हुए। शोभायात्रा आर्य समाज कलकत्ता से प्रारम्भ होकर विभिन्न मार्गों से होती हुई शिमला व्यायाम समिति स्थित उत्सव स्थल पर पहुँची। मार्ग में विश्व हिन्दू परिषद एवं आर्य समाज बड़ा बाजार द्वारा शोभायात्रा का भव्य स्वागत किया गया। उत्सव स्थल पर पहुँचने के उपरान्त सभी उपस्थित जनों को प्रसाद वितरित किया गया तथा आचार्य आनन्द पुरुषार्थी जी द्वारा ध्वजारोहण सम्पन्न किया गया। शोभा यात्रा के माध्यम से आर्य समाज का संदेश गगनभेदी नारे लगाकर जन-जन तक पहुँचाया गया।

उत्सव के दूसरे दिन यज्ञ सम्पन्न होने के उपरान्त यज्ञ ब्रह्मा जी द्वारा सारगर्भित व्याख्यान प्रस्तुत किया गया तथा अपराह्न 2 बजे से महिला सम्मेलन का आयोजन हुआ, जिसमें आर्य स्त्री समाज, कलकत्ता की महिलाओं द्वारा भजन, प्रवचन एवं "जागृति" नाटिका की प्रभावशाली प्रस्तुति दी गई। इस कार्यक्रम की मुख्य वक्ता एवं अध्यक्षा आचार्या अर्चना शास्त्री जी रहीं। कार्यक्रम का सफल संयोजन पं. देवव्रत तिवारी जी एवं मन्त्राणी कविता अग्रवाल जी द्वारा किया गया।

महिला सम्मेलन में अपने उद्‌बोधन में आचार्या अर्चना शास्त्री जी ने कहा कि महिलाओं के उत्थान के लिए महर्षि दयानन्द सरस्वती जी द्वारा किए गए कार्य अमूल्य हैं और उन्हें कभी भुलाया नहीं जा सकता। वैदिक परम्परा में नारी को विदुषी, गृहलक्ष्मी एवं राष्ट्र निर्माण की आधारशिला माना गया है, और महर्षि दयानन्द जी ने इसी वैदिक दृष्टि को पुनः प्रतिष्ठित किया। उन्होंने नारी शिक्षा, समान अधिकार, विधवा पुनर्विवाह एवं सामाजिक सम्मान के लिए निर्भीक प्रयास किए। आचार्या जी ने कहा कि महर्षि दयानन्द का यह वैदिक चिन्तन आज भी नारी सशक्तिकरण का सशक्त आधार है और प्रत्येक आर्य नारी के लिए प्रेरणास्रोत है।

सायंकाल 6 से 7 बजे तक आर्य कन्या महाविद्यालय की छात्राओं द्वारा विभिन्न सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ दी गईं, जिन्हें उपस्थित जनसमूह ने अत्यन्त सराहा। इस कार्यक्रम में महाविद्यालय की अध्यापिकाओं का विशेष योगदान रहा।

सायं 7 से 9 बजे तक "गुरुकुलीय शिक्षा का महत्व" विषय पर कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें आचार्य योगेश भारद्वाज जी, पं. संदीप आर्य गिल जी, आचार्य आनन्द पुरुषार्थी जी एवं अन्य विद्वानों ने अपने सारगर्भित विचार प्रस्तुत किए।

शेष पृष्ठ 6 पर

महर्षिदयानन्दस्य संस्कारविधौ नारीणां स्थितिः

– डॉ. मनुदेवबन्धुः, आचार्य वेदविभाग

प्रस्तावना – आर्यसमाजस्य संस्थापकः महर्षिदयानन्दः वेदोद्धारकः, राष्ट्रभक्तः,आर्यजातिसमुद्धारकः, संस्कृतभाषायाः प्रबलपोषकः, कुरीतिनिवारकः, पाखण्डखण्डकः, वेदभाष्यकारकः नारीणां कल्याणकारकश्चासीत्। यत्र महर्षिदयानन्दः वेदभाष्यं कृतवान्, तत्रैव सत्यार्थप्रकाश ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका संस्कारविधि आर्याभिविनय वर्णोच्चारणशिक्षा व्यवहारभानु गोकरुणानिधि पञ्च महायज्ञ विधि आदीनां ग्रन्थाना प्रणेतापि आसीत्। वेदस्य माहात्म्यं व्याकुर्वन्दयान्दो लिखति –

'वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परमधर्म है।'

अमर ग्रन्थे सत्यार्थप्रकाशे मातृगुणान् व्याख्यापयन् दयानन्दो लिखति – **'मातृमान् पितृमान् आचार्यवान् पुरुषो वेद।'** यह शतपथ ब्राह्मण का वचन है। वस्तुतः जब तीन उत्तम शिक्षक अर्थात् एक माता, दूसरा पिता और तीसरा आचार्य होवे, तभी मनुष्य ज्ञनवान् होता है। वह कुल धन्य! वह सन्तान बड़ा भाग्यवान्! जिसके माता और पिता धार्मिक विद्वान् हों। जितना माता से सन्तानों को उपदेश और उपकार पहुँचता है, उतना किसी से नहीं। जैसे माता सन्तानों पर प्रेम, उनका हित करना चाहती है, उतना अन्य कोई नहीं करता। इसलिए (मातृमान्) अर्थात् **'प्रशस्ता धार्मिकी विदुषी माता विद्यते यस्य स मातृमान्।'** धन्य वह माता हैकि जो गर्भाधान से लेकर जब तक पूरी विद्या न हो तब तक सुशीलता का उपदेश करे।'

गर्भाधानसंस्कारप्रसंगे – संस्कारविधेः गर्भाधानसंस्कारप्रसंगे नारीणां महिमानं विशिनष्टि दयानन्दः – 'गर्भाधान उसको कहते हैं कि जो – **'गर्भस्याधानं वीर्यस्थापनं स्थिरीकरणं यस्मिन् येन वा कर्मणा तद् गर्भाधानम्।'** गर्भ का धारण अर्थात् वीर्य का स्थापन, गर्भाशय में स्थिर करना जिस क्रियासे होता है, उसी को गर्भाधान संस्कार कहते हैं। जैसे बीज और क्षेत्र के उत्तम होने से अन्नादि पदार्थ भी उत्तम होते हैं, वैसे उत्तम बलवान् स्त्री-पुरुषों से सन्तान भी उत्तम होते हैं। इससे पूर्ण युवावस्था यथावत् ब्रह्मचर्य का पालन और विद्याभ्यास करके अर्थात् न्यून से न्यून सोलह वर्ष की कन्या और पच्चीस वर्ष का पुरुष अवश्य हो और इससे अधिक वय वाले होने से अधिक उत्तमता होती है।क्योकि बिना सोलहवें वर्ष के गर्भाशय में बालक के शरीर को यथावत् बढ़ने के लिए अवकाश उपयुक्त और स्त्री के शरीर में गर्भ के धारण-पोषण का सामर्थ्य भी नहीं होता और पच्चीस वर्ष के बिना पुरुष का वीर्य भी उत्तम नहीं होता।

पुंसवनसंस्कारप्रसंगे – महर्षिदयानन्दः पुंसवनसंस्कारप्रसंगे नारीणामारोग्यं स्वास्थ्यं सुसमीचीनं भवेत्, भोजनादिकं बलकारि भवेदिति प्रदर्शयन् लिखित – 'इसके पश्चात् स्त्री सुनियम युक्ताहार विहार करे। विशेषकर गिलोय, ब्राह्मी ओषधि और सूंठ (शुण्ठी) को दूध के साथ थोड़ी-थोड़ी खाया करे और अधिक शयन और अधिक भाषण, अधिक खारा, खट्टा, तीखा, कड़वा, रेचक, हरड़ आदि न खावे, सूक्ष्म आहार करे। क्रोध, द्वेष, लोभादि दोषों में न फंसे, चित्त को सदा प्रसन्न रखे, इत्यादि शुभाचरण करे।'

सीमन्तोन्नयनसंस्कारप्रसंगे – सीमन्तोन्नयनसंस्कारः पूर्णरूपेण गर्भिणी स्त्रीणां कल्याणाय क्रियते। दयानन्दो लिखति – 'अब तीसरा संस्कार सीमन्तोन्नयन कहते हैं, जिससे गर्भिणी स्त्री का मन सन्तुष्ट, आरोग्य, गर्भस्थिर, उत्कृष्ट होवे और प्रतिदिन बढ़ता जावे।'

विष्णोः श्रेष्ठेन रूपेणास्यां नार्यां गवीन्याम्।

पुमांसं पुत्रानाधेहि दशमे मासि सूतवे स्वाहा॥

विष्णोः सर्वव्यापकस्य परमेश्वरस्य श्रेष्ठेन रूपेण सौन्दर्यपूर्णरूपेण अस्यां गवीन्यां गोसदृश्यां नार्यां पुमांसं बलवन्तं रोग रहितं पुत्रम् आधेहि। हे विष्णो! दशमे मासे इमां नारीं मदीयां पत्नीं सर्वगुणसम्पन्नस्य सन्तानस्य जननीं निर्मापय। अग्रे लिखति दयानन्दः – **'किं पश्यसि? प्रजां पश्यामि।'** येन-केन प्रकारेण प्रजा भवेदेव। सीमन्तोन्नयन संस्कारस्य समापन प्रसंगे महर्षिदयानन्दो लिखति –

'तत्पश्चात् एकान्त में वृद्ध कुलीन और सौभाग्यवती, पुत्रवती गर्भिणी अपने कुल की और ब्राह्मणों की स्त्रियाँ बैठें, प्रसन्न वदन और प्रसन्नता की बातें करें और वह गर्भिणी स्त्री उस खिचड़ी को खावे और वे वृद्ध समीप बैठी हुई उत्तम स्त्री लोग आशीर्वाद देवें।

ओ३म् वीरसूस्त्वं भव, जीवसूस्त्वं भव, जीवपत्नी त्वं भव।

हे नारि! त्वं वीरपुत्राणामुत्पादयित्री भव। हे स्त्री! त्वं जीवनशीलानामायुष्यमतां सन्तानानां जननी भव। हे पत्नी! त्वं जीवनशीलस्यायुष्मतः पत्युः पत्नी भव। त्वमेव समस्तपरिवारस्य कल्याणकर्त्री असि। त्वमेव सम्पूर्ण परिवारस्य पालयित्री असि। त्वमेव अन्नपूर्णा असि।

जातकर्मसंस्कारप्रसंगे – जातकर्मसंस्कारः जातस्य जन्मप्राप्तस्य पुत्रस्य पुत्र्याः वा भवति। अमुस्मिन् संस्कार पुत्रस्य कल्याणाय आयुर्विद्या बल बर्धनाय पिता कर्मकाण्डं करोति, भगवन्तञ्च प्रार्थयति।

ओ३म् इडासि मैत्रावरुणी वीरे वीरमजीजनथाः।

सा त्वं वीरवती भव याऽस्मान्वीरवतोऽकरत्॥

हे स्त्री! त्वं इडा स्तुत्या असि। त्वं मैत्रावरुणी असि। त्वं मैत्री सम्बन्धयोग्या असि। त्वं वरयितव्या असि। त्वं वीरपुत्रं वीराङ्गना पुत्रीं वोत्पादयित्री असि। त्वं स्वयमेवापि वीरवती भव। वीरता युक्तानि साहसिकानि कार्याणि कुरु। त्वं नारी असि। त्वमस्मानपि वीरान् भावय, निर्माय। दयानन्दो लिखति –

'इस मन्त्र में ईश्वर की प्रार्थना करके प्रसूता स्त्री को प्रसन्न करके पश्चात् स्त्री के दोनों स्तन किञ्चित् उष्ण सुगन्धित जल से प्रक्षालन कर पोंछ के..... बालक के मुख में देवें।'

परन्तु अद्यत्वे अत्याधुनिकाः नार्यः स्वदुग्धं न धापयन्ति, न पाययन्ति। परन्तु दयानन्दो लिखति सद्यो जाता माता यत् सद्यो जातं पुत्रं स्वकीयं स्तनस्थं दुग्धं स्तनन्धयमवश्यं पाययतु।

अद्यापि सुपरीक्षितमेतद् यत् माता यदि स्वकीयं पीतवर्णं स्वर्णिम वर्णं दुग्धं पाययति, तदा सन्तानं स्वस्थम्आयुष्मद् बलवद् विद्वांश्च भवति।

पृष्ठ 5 का शेष

आर्य समाज, 19 विधान सरणी, कलकत्ता का 140वाँ वार्षिकोत्सव समारोह भव्यता के साथ हुआ सम्पन्न

तीसरे दिन अथर्ववेद पारायण यज्ञ के उपरान्त आचार्य आनन्द पुरुषार्थी जी द्वारा संध्या मन्त्रों की व्याख्या की गई। प्रातः 9.30 से 11.30 बजे तक भजन एवं प्रवचन हुए। पं. संदीप आर्य गिल जी ने भजनों द्वारा तथा आचार्य योगेश भारद्वाज जी ने अपने ओजस्वी उद्बोधन से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया।

सायंकाल 5 बजे से गुरुकुल की छात्राओं द्वारा संध्या, भजन एवं विद्वानों द्वारा बंग भाषा में व्याख्यान प्रस्तुत किए गए। सायं 7 बजे से वेद सम्मेलन का आयोजन हुआ, जिसके संयोजक आचार्य राहुलदेव शास्त्री तथा अध्यक्ष आचार्य योगेश भारद्वाज जी रहे। वक्ताओं ने वेदों को अपौरुषेय ग्रन्थ बताते हुए उनके विविध विषयों पर प्रकाश डाला।

चौथे दिन अथर्ववेद पारायण यज्ञ का चौथा दिवस अत्यन्त श्रद्धा एवं भक्ति के वातावरण में सम्पन्न हुआ। आचार्य आनन्द पुरुषार्थी जी द्वारा बीच–बीच में वेदमन्त्रों की व्याख्या से सम्पूर्ण वातावरण यज्ञमय हो गया।

प्रातः 9.30 बजे मंचीय कार्यक्रम पं. संदीप आर्य गिल जी के भजनों से प्रारम्भ हुआ। तत्पश्चात स्वामी आर्यवेश जी एवं आचार्य योगेश भारद्वाज जी के उपदेश एवं प्रवचन हुए।

सायंकाल 7 बजे राष्ट्र रक्षा एवं आर्य संस्कृति सम्मेलन का आयोजन स्वामी आर्यवेश जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। विद्वानों ने राष्ट्र सुरक्षा, वैदिक संस्कृति के संरक्षण तथा स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के राष्ट्रीय चिन्तन पर अपने विचार प्रस्तुत किए।

अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती के अनुसार राष्ट्र केवल भू–भाग का नाम नहीं बल्कि इस भूभाग पर रहने वाले लोगों से ही वह राष्ट्र कहलाता है। राष्ट्र रक्षा का वास्तविक अर्थ केवल सीमाओं की सुरक्षा नहीं, बल्कि उस वैदिक संस्कृति की रक्षा है, जो राष्ट्र को नैतिक, बौद्धिक तथा आत्मिक शक्ति प्रदान करती है। जब तक राष्ट्र की आत्मा सुरक्षित रहती है, तब तक उसका अस्तित्व भी अडिग बना रहता है।

स्वामी जी ने कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने वेदों को अपौरुषेय एवं सार्वकालिक सत्य का मूल स्रोत माना है। उनके अनुसार आर्य संस्कृति का आधार वेद हैं, जिनमें सत्य, न्याय, कर्म, परोपकार, स्वाधीनता, समानता तथा अनुशासन जैसे उच्च जीवनमूल्य निहित हैं। यही मूल्य राष्ट्र को संगठित, सशक्त और स्थिर बनाते हैं। यदि समाज इन वैदिक आदर्शों से विमुख हो जाता है, तो राष्ट्र भीतर से दुर्बल हो जाता है, चाहे उसके पास कितनी ही भौतिक शक्ति क्यों न हो। स्वामी जी ने राष्ट्र रक्षा का मूल आधार संस्कारयुक्त शिक्षा को बताया और कहा कि यह लक्ष्य गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति के माध्यम से ही पूर्ण रूप से प्राप्त किया जा सकता है। गुरुकुलों में ब्रह्मचर्य, संयम, श्रम एवं स्वावलम्बन द्वारा चरित्र निर्माण किया जाता है। स्वामी जी ने कहा कि चरित्रहीन व्यक्ति राष्ट्र के लिए भार स्वरूप होता है, जबकि सदाचारी एवं कर्तव्यनिष्ठ नागरिक ही राष्ट्र का वास्तविक रक्षक होता है।

वैदिक दृष्टिकोण में शौर्य एवं आत्मरक्षा के महत्व पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने कहा कि वेदों में क्षात्रधर्म की स्पष्ट व्यवस्था है, जिसके द्वारा राष्ट्र बाह्य आक्रमणों से सुरक्षित रहता है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का स्पष्ट मत है कि अन्याय को सहना भी अधर्म है। अतः राष्ट्र की रक्षा के लिए शारीरिक, मानसिक एवं नैतिक बल का होना अनिवार्य है। स्वामी जी ने आगे कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने जातिवाद, भाषावाद, क्षेत्रवाद, अन्ध विश्वास, संकीर्णता, साम्प्रदायिकता आदि को राष्ट्र का आन्तरिक शत्रु बताया है। जब समाज सत्यज्ञान से दूर हो जाता है, तब विदेशी आक्रमण एवं सांस्कृतिक पतन सहज हो जाता है। इसलिए आर्य संस्कृति की रक्षा का वास्तविक अर्थ है – वेदाधारित जीवन–पद्धति को अपनाना, स्वदेशी भावना को जाग्रत करना, समान शिक्षा व्यवस्था, नारी सम्मान तथा सामाजिक समरसता को सुदृढ़ करना।

अन्त में स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि आज के परिप्रेक्ष्य में महर्षि दयानन्द जी का वैदिक चिन्तन राष्ट्र रक्षा का स्थायी एवं व्यावहारिक समाधान प्रस्तुत करता है। जब नागरिक वेदों के आलोक में अपने कर्त्तव्यों का निष्ठापूर्वक पालन करते हैं, तभी राष्ट्र की आत्मा सुरक्षित रहती है। स्वामी जी ने कहा कि इस प्रकार के आयोजन निःसंदेह समाज में नवीन जागृति उत्पन्न करते हैं। स्वामी जी ने सम्मेलन की सफलता हेतु आर्य समाज के समस्त पदाधिकारियों एवं सहयोगियों को विशेष रूप से साधुवाद एवं बधाई दी।

पांचवे दिन का यज्ञ आचार्य आनन्द पुरुषार्थी जी के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ। वैदिक कन्या गुरुकुल की छात्राओं द्वारा स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के अन्तिम जीवन प्रसंग का जीवन्त मंचन किया गया, जिसे जनसमूह ने भावविभोर होकर सराहा।

अपराह्न 2 बजे बाल सत्संग का आयोजन हुआ, जिसमें स्थानीय एवं बाहर से आए गुरुकुल के छात्र–छात्राओं ने सहभागिता की। सभी बच्चों को आर्य समाज कलकत्ता की ओर से उपहार प्रदान किए गए।

सायंकाल कन्या निर्माण गुरुकुल की छात्राओं द्वारा स्वामी जी को विष दिए जाने की परिस्थितियों का प्रभावशाली मंचन प्रस्तुत किया गया। सायं 6 बजे समाज के वरिष्ठ सदस्य श्री द्वारका प्रसाद जायसवाल जी का अभिनन्दन समारोह आयोजित हुआ, जिसमें विभिन्न समाजों के प्रतिनिधियों ने उनका सम्मान किया।

समारोह के अन्तिम दिन छः दिवसीय यज्ञ की पूर्णाहुति की गई। इस अवसर पर लगभग 32 यजमान दम्पतियों ने श्रद्धापूर्वक आहुति प्रदान की। यज्ञोपरान्त प्रसाद वितरण किया गया। यज्ञ के उपरान्त प्रातः 10.30 से 1.30 बजे तक मंचीय कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। आर्य समाज के प्रधान श्री दीपक आर्य जी द्वारा विद्वानों एवं सहयोगियों के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया गया। शान्ति पाठ एवं जयघोष के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। उत्सव को सफल बनाने में सर्वश्री दीपक आर्य, श्री ध्रुवचन्द जायसवाल, श्री राजबलि वर्मा, श्री छोटेलाल आर्य, श्री सुरेश अग्रवाल, श्री मदन सेठ एवं आर्य समाज के सभी पदाधिकारियों ने विशेष पुरुषार्थ किया। कार्यक्रम में बंगाल के विभिन्न क्षेत्रों से लोग बड़ी संख्या में पधारे तथा कई गुरुकुलों के ब्रह्मचारी एवं ब्रह्मचारिणियाँ भी सैकड़ों की संख्या में उत्सव में सम्मिलित हुए।

आर्य समाज बड़ा बाजार, आर्य समाज हावड़ा एवं अन्य समाजों से पदाधिकारी एवं सदस्यगण भी उत्सव में सम्मिलित हुए। इस अवसर पर पं. मधुसूदन शास्त्री व पं. वेद प्रकाश शास्त्री ने यज्ञापवीत भी दिलवाये। वयोवृद्ध विद्वान् लेखक श्री खुशहाल चन्द्र आर्य का विशेष रूप से स्वागत किया गया। मेजर विजय आर्य चण्डीगढ़ एवं स्वामी धर्मार्थी–हरिद्वार द्वारा लगाये गये साहित्य एवं अन्य वस्तुओं के स्टॉल पर लोगों की भीड़ लगी रही और लोगों ने खूब साहित्य खरीदा। उत्सव में बंगला भाषा में लिखित कई पुस्तकों का विमोचन भी किया गया। कार्यक्रम के दौरान प्रतिदिन ऋषि लंगर की सुन्दर व्यवस्था की गई थी जिसे सभी ने ग्रहण किया।

महर्षि दयानन्द और विश्व शान्ति

- श्री आर्यभिक्षु,आर्य वानप्रस्थ आश्रम, ज्वालापुर

महर्षि जैमिनी के पश्चात् ऋषि परम्परा में स्वामी दयानन्द सरस्वती प्रथम महापुरुष हैं, जिन्होंने शाश्वत सनातन तथा सार्वभौम मानव–धर्म वेद धर्म की दुहाई ही नहीं दी, अपितु उसके लोप होने के परिणाम स्वरूप उत्पन्न संसार के समस्त मत, तन्त्र तथा सम्प्रदायों की विधिवत् समीक्षा की (सत्यार्थप्रकाश ११ से १४ वें समुल्लास तक)। वह स्वयं स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश में लिखते हैं 'ब्रह्मा से लेकर जैमिनी पर्यन्त ऋषि–मुनियों द्वारा अनुमोदित और प्रतिपादित सनातनधर्म ही हमारा धर्म है। इसे मानना व मनवाना अपना अभीष्ट है। किन्तु कोई भी नूतन मत, पन्थ अथवा सम्प्रदाय चलाने की किञ्चित्मात्र भी इच्छा नहीं है।' ऐसा लिखने में उनका हेतु उनके शब्दों में स्पष्ट है। 'सर्व सत्य का प्रचार कर सबको एक मत में करा, द्वेष छुड़ा परस्पर में दृढ़ प्रीतियुक्त कराके सब को सुख लाभ पहुँचाने के लिए मेरा प्रयत्न और अभिप्राय है।'' इस कथन में उनके हृदय में विश्व–शान्ति के लिए एक ठोस रचनात्मक पुरोगम की स्पष्ट आभा मिलती है।

संसार में अशान्ति के हेतु दो ही मौलिक हेतु हो सकते हैं। प्रथम भोग सामग्री की वितरण व्यवस्था और द्वितीय, भोक्ता का भोग के साथ सम्बन्ध। प्रथम स्थिति का समाधान सामाजिक क्रान्ति तथा राजनैतिक उथल–पुथल से होता रहता है। द्वितीय के लिये स्थान, समय तथा परिस्थिति के आधार पर पुरुष विशेष द्वारा उपस्थित विचार तथा विधि कार्य करते हैं। पहले के विस्तार स्वरूप राजतन्त्र से लेकर लोक तन्त्र तक की व्यवस्थाओं का प्रादुर्भाव हुआ और दूसरे के विस्तार स्वरूप मत, ग्रन्थ तथा सम्प्रदाय के रूप में पारसी, ईसाई, मुसलमान, बौद्ध, जैन इत्यादि आचार पद्धतियों का प्रादुर्भाव हुआ। (जिन्दावस्ता, बाइबिल, कुरान, धम्मपद, त्रिपिटक)। इन्हीं दोनों पाटों के बीच विश्व की शान्ति पिसती रही और आज अपने शिखर पर पहुँच चुकी है। विश्व में अशान्ति के मूल कारणों में दो प्रमुख हैं। राजनीतिक मान्यताओं की रस्सा–कसी और मत–मतान्तरों की संख्या वृद्धि में होड़ की प्रवृत्ति। विश्व के इतिहास में जारशाही और उसका दुःखद अन्त एक ओर है, तो ईसाई मत की ही दो शाखाओं, कैथलिक और प्रोटेस्टेन्ट के मध्य की रक्त–रंजित बीभत्स गाथाएँ दूसरी ओर है। इस प्रकार जब दोनों ओर की स्थिति अत्यन्त भयावह तथा विनाशकारी स्वरूप में विद्यमान थीं तब इस धरा–धाम पर बाल–ब्रह्मचारी, युगपुरुष, क्रान्ति–द्रष्टा भगवान् दयानन्द का प्रादुर्भाव आर्यावर्त की पवित्र ऋषि भूमि में सम्पूर्ण अविद्या तथा अज्ञान का नाश करके विश्व–शान्ति स्थापनार्थ उन्नीसवीं सदी के मध्य में हुआ।

महर्षि दयानन्द दया का था सागर,
जगत की व्यथा का दवा बनने आया।
तिमिर छा रहा था अविद्या का घर-घर,
गगन में दिवाकर नया बनके आया।।

महर्षि ने इस व्यापक अविद्या, अज्ञान तथा सत्य का भेद न करते हुए सिंहनाद किया, ''मेरा अपना मन्तव्य वही है जो सबको तीन काल में एक–सा मानने योग्य है। मेरी कोई अपनी नवीन कल्पना नहीं है, अपितु जो सत्य है उसे मानना और मनवाना और जो असत्य है उसे छोड़ना और छुड़वाना अपना अभीष्ट है।'' इसी सत्य के प्रकाशन संदर्भ में उन्होंने विश्व के समस्त नागरिकों के लिए एक अन्तर्राष्ट्रीय राजनैतिक जय घोष दिया– **'अपने देश में अपना राज्य'।** इस प्रकार संसार के समस्त पराधीन राष्ट्रों को एक नूतन चेतना तथा स्फूर्ति इस दिशा में प्राप्त हुई और अपने देश के साथ ही अन्य पराधीन राष्ट्र भी स्वाधीनता के लिए खड़े हो गये। अनेकों ने परिणाम स्वरूप वर्षों की दासता से मुक्ति पाई और आज भी अनेक देश इस दिशा में संघर्षरत हैं। यह सब भगवान् दयानन्द के एक मन्त्र का चमत्कार है। उर्दू के एक कवि ने ठीक ही कहा है –

तू नहीं, पैगाम तेरा हर किसी के दिल में है।
जल रही अब तक शमा रोशनी महफिल में है।।

महर्षि ने इस दिशा में स्थायित्व लाने के निमित्त एक आन्दोलन का भी सूत्रपात किया– वह था संसार के श्रेष्ठ पुरुषों का संसार के कल्याण के लिए एक वेदी पर उपस्थित होना। इस आन्दोलन को निरन्तर चालू रखने के लिये संगठन का गठन भी किया जिसे :**'आर्यसमाज'** अर्थात् श्रेष्ठ पुरुषों का संगठन '' Society of the noble men '' कहते हैं। महर्षि ने इस आन्दोलन के तीन चरण निश्चित किये– एक ईश्वर, एक धर्म तथा एक विश्व '' One God, one religion and one world '' संसार में अनेक महापुरुषों ने इस दिशा में अपनी योग्यता तथा क्षमता के अनुसार कार्य किया किन्तु इस मौलिक त्रिसूत्र के अभाव में उनके सम्पूर्ण प्रयास विफल रहे। उदाहरण स्वरूप, मार्क्स का सर्वहारा दर्शन तथा गाँधी जी का सर्वोदय। यहाँ एक ईश्वर से तात्पर्य एक प्राप्तव्य – ''One distinction and one God'' से है। एक धर्म से अभिप्राय एक आचरण–संहिता से है और एक विश्व से अर्थ एक परिवार से है। जिस प्रकार से एक परिवार में रहने वालों का एक आदर्श इसकी प्राप्ति का एक माध्यम अर्थात् सभी साधकों के साधन तथा साध्य का सामञ्जस्य। महर्षि ने इसके लिए तर्क युक्ति, प्रमाण तथा प्रयोग के आधार पर संसार के प्रमुखतम आचार्यों से वार्ता की और अपेक्षित प्रयास भी किया। उनके शब्दों में विश्व की अशान्ति का मूल कारण इस प्रकार के भेदों के माध्यम से उत्पन्न होने वाला घृणा और द्वेष का वातावरण ही है। ''यद्यपि प्रत्येक मत, पन्थ तथा सम्प्रदाय में कुछ–कुछ अच्छी बातें हैं तथापि आचार्यों में परस्पर मतभेद होने के कारण अनुयायियों में मतभेद कई गुणा बढ़कर घृणा और द्वेष की उत्पत्ति करता है। क्या ही अच्छा होता कि सभी आचार्य प्रवर एक स्थल पर बैठकर मनुष्यमात्र के लिए सर्वतन्त्र, सार्वभौम तथा सनातन नियमों का संकलन कर पाते, जिससे मानव समाज घृणा और द्वेष से मुक्त होकर श्रद्धा और स्नेह की पवित्र स्थिति को प्राप्त होता।'' उन्होंने चाँदपुर (उत्तर–प्रदेश) में एक धर्म मेला के अन्दर इस प्रकार के विचार–विमर्श की व्यवस्था भी की। उसमें पादरी, मौलाना, पण्डित सभी उपस्थित थे। महर्षि ने तर्क, युक्ति, प्रमाण और प्रयोग से उन सबको सहमत न होते देख अन्ततोगत्वा एक अद्वितीय विधि उपस्थित की। सब अपने–अपने मत के श्रेष्ठ विचार पृथक्–पृथक् पत्रों पर लिखें। पुनः सबको एक साथ एकत्रित किया जाये और जो–जो विचार तथा आचार उपस्थित हों उनमें से सर्वमान्य विचार–आचार एक स्थल पर संकलित

कर लिये जावें और हम सब उन पर हस्ताक्षर कर देवें, जिससे यह आचरण संहिता संसार के सभी मनुष्यों के लिए मान्य, व्यावहारिक तथा उपयोगी घोषित हो जावे, और इस प्रकार परस्पर विभिन्न मत मतान्तरों के आधार पर विभाजित मानव समाज एकता के सूत्र में बंधकर विश्व में शान्ति स्थापित कर सके। उपस्थित किसी भी प्रतिनिधि (हिन्दू, मुस्लिम, ईसाई तथा ब्रह्म–समाज) ने इसका स्वागत अपने क्षुद्र स्वार्थ तथा नेतागिरि के कारण नहीं किया।

महर्षि भौतिक जगत् में भी अर्थ के दूषित वितरण के परिणाम का समाधान बताते हैं जो आज की समस्या का एकमात्र हल है। आज मजदूर जहां एक ओर कम से कम काम करना चाहता है, वहीं दूसरी ओर अधिक से अधिक वेतन चाहता है और इसी प्रकार महाजन जहाँ एक ओर अधिक से अधिक काम लेना चाहता है वहीं दूसरी ओर कम से कम वेतन देना चाहता है। तात्कालिक समाधान के रूप में इस विषम मनोवृत्ति के परिणाम स्वरूप ही मजदूर यूनियन, कर्मचारी संघ तथा मर्चेन्ट एसोसियेशन का विश्व में जाल बिछा दीखता है। समाधान तो ऋषि इसे पूर्णतया उलट देने में मानते हैं। अर्थ क्या हुआ? मजदूर अधिक से अधिक काम करें और कम से कम वेतन लेने की इच्छा रखें और महाजन कम से कम काम लेकर मजदूरों को अधिक से अधिक देने की कामना करें। विश्व-शान्ति के लिए व्यक्ति को कम से कम समाज से लेना होगा और अधिक से अधिक समाज को देना होगा तभी वर्तमान अशान्ति, अनिश्चिन्तता तथा अराजकता का अन्त होगा अन्यथा कदापि नहीं। मुझे कहने दीजिए– आज हमें भोग में बासा– होटल की प्रवृत्ति से हट कर परिवार में पाकशाला प्रवृत्ति में आना होगा। हम जब होटल में भोजन करते हैं तो कम से कम होटल वाले को देकर अधिक से अधिक खा लेना चाहते हैं। किन्तु जब हम परिवार में भोजन करते हैं तो कम से कम खाकर अधिक से अधिक परिवार के अन्य सदस्यों के लिए छोड़ना चाहते हैं। ऐसा मन कब बनेगा ? जब तन के निखार निमित्त दर्पण की भांति हमें मन के सुधार के लिए दर्शन मिलेगा। यह दर्शन जिस आचरण–संहिता में उपलब्ध है वह परमात्मा द्वारा प्रदत्त अपनी प्रजा के निमित्त विधि–निषेधात्मक वेदज्ञान है, जो सम्पूर्ण सृष्टि की अवधि के भीतर (चार अरब बत्तीस करोड़ वर्ष) उपस्थित विश्व के सभी श्रेष्ठतम उपभोक्ताओं मनुष्यमात्र के लिए समान रूप से सुखदायक तथा उपयोगी है। उससे हम न्यूनतम परिश्रम द्वारा अधिकतम सुख की प्राप्ति कर सकते हैं। इसे उपभोग के नियम– लातगयर कवायद '' Laws of Consumption ''कहते हैं। इसके अनुकूल चलकर हम शाश्वत सुख–आनन्द–मोक्ष की प्राप्ति कर सकते हैं। जो मानवमात्र का एकमात्र अभीष्ट लक्ष्य है। इस आचरण–संहिता का प्रमुख भाग कर्मफल मीमांसा कहलाता है और वह इस प्रकार है– दर्शनकारों की व्यवस्था में आयु, जाति तथा भोग मनुष्य को पूर्व जन्म के आधार पर ही मिलते हैं (यहां जाति शब्द का तात्पर्य योनि – पशु, पक्षी, पतंगा, मनुष्य आदि से है)। भोग दो प्रकार के हैं– एक सुखद तथा दूसरा दुःखद। दुःखद भोग में हम किसी का सहयोग प्राप्त कर ही नहीं सकते। कौन होगा ऐसा जो मेरे पचास बेत के दंड में कुछ स्वयं सहन कर मेरा सहयोग करना चाहेगा। किन्तु सुखद भोग में हम किसी को भी अपना भागीदार बना सकते हैं, और कोई भी भागीदार बनने को तैयार हो सकता है। उदाहरणार्थ मेरे पास भोग के पचास आम हैं। हम सब स्वयं भी खा सकते हैं और इनमें से आवश्यकतानुसार तथा इच्छानुसार चार आम खाकर शेष इक्कीस आम किसी को भी खाने को दे सकते हैं। स्वयं सम्पूर्ण खा जाने पर भोग मूलतया समाप्त हो जाता है। किन्तु कुछ खाकर और शेष दूसरों को खिलाकर हम दूसरों को खिलाये हुये आमों के भोग के द्वारा अपने लिये नूतन कर्म का सृजन कर लेते हैं जो हमें पुनः इस जन्म अथवा दूसरे जन्म में मिलेगा। इस दर्शन के प्रचार और प्रसार में प्रत्येक व्यक्ति खाने के चक्कर से निकल कर खिलाने की होड़ में खड़ा हो जायेगा। तब विश्व में अशान्ति का प्रश्न ही नहीं रहेगा और स्थायी शान्ति स्वतः उपस्थित हो जायेगी। आज हम व्यवहार पक्ष में ऐसा मानते हैं– '' Foolishmen invite or wisemen eat '' मूर्ख व्यक्ति खिलाते हैं और बुद्धिमान व्यक्ति खाते हैं। किन्तु स्थिति तब बदल जावेगी और नई लोकोक्ति तैयार होगी– '' Wise men invite and foolishmen eat '' बुद्धिमान व्यक्ति खिलाते हैं और मूर्ख व्यक्ति खाते हैं। परिणाम स्वरूप समस्त मानव समाज एक परिवार की संज्ञा को प्राप्त हो जायेगा जिसका प्रत्येक सदस्य कम से कम उपयोग करके अधिक से अधिक दूसरों के उपभोग निमित्त छोड़ने में अपने सम्पूर्ण विवेक और कौशल को लगा देगा, जिससे विश्व–शान्ति का महर्षि कल्पित रूप साकार हो उठेगा।

''अपनी आवश्यकता से अधिक पर अपना अधिकार मानना सामाजिक हिंसा है।'' इससे बचना ही विश्व-शान्ति का एकमात्र हल है।

आवश्यकता है

सूचित किया जाता है कि सरस्वती कन्या, गुरूकुल एम. एम. लाल संस्कृत महाविद्यालय में प्रधानाचार्य का पद रिक्त है। इस पद हेतु आवेदन पत्र आमंत्रित किये जाते हैं।

पात्रता :

- शास्त्री एवं आचार्य (प्राचीन व्याकरण को वरीयता)
- एम.ए.(संस्कृत), बी.एड.
- संस्कृत संभाषण में दक्षता
- पति–पत्नी को वरीयता

सुविधायें :–

- उत्तम आधुनिक आवास, दुग्ध, भोजन आदि की व्यवस्था तथा आकर्षक मानदेय

इच्छुक अभ्यर्थी सम्पर्क करें –
9899349304, 9871798221

नोट :– अपना आवेदन पूर्ण विवरण के साथ शैक्षिक प्रपत्रों सहित वाट्सएप पर भेजें।

अन्तिम तिथि 10 फरवरी 2026

पंजीयन संख्या (R.N.I. No.)- DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/2024-26
Licence to Post without Pre-Payment of Postage. U (C)-289/2024-26

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य समाज के त्यागी, तपस्वी एवं तेजस्वी संन्यासी, सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें :-
www.facebook.com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें तथा अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।
ई-मेल : aryavesh@gmail.com
दूरभाष : 011-23274771, 42415359

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

आर्य प्रतिनिधि सभा तेलंगाना+आन्ध्र प्रदेश के कार्यालय में गणतन्त्र दिवस के अवसर पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी तथा मंत्री प्रो. विट्ठलराव आर्य ने फहराया राष्ट्रीय ध्वज तिरंगा

हैदराबाद प्रवास के दौरान गणतंत्र दिवस के पावन अवसर पर 26 जनवरी 2026 को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी तथा सार्वदेशिक सभा के मंत्री एवं आर्य प्रतिनिधि सभा तेलंगाना+आंध्र प्रदेश के प्रधान प्रो. विट्ठलराव आर्य जी ने आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यालय में राष्ट्रीय ध्वज तिरंगा फहराया। इस अवसर पर सभा के कार्यकर्ता एवं अनेक गणमान्य महानुभाव उपस्थित रहे।

श्री देवेन्द्र सहारण, ग्राम–जुलानी, जिला–जीन्द का असामयिक निधान
परिवार एवं आर्य समाज की अपूर्णीय क्षति – स्वामी आर्यवेश

एक उत्साही, ऊर्जावान एवं आर्य अध्यापक श्री देवेन्द्र सहारण, ग्राम–जुलानी, जिला–जीन्द का गत् दिनों लगभग 50 वर्ष की आयु में असमय निधन हो गया। उनके निधन से परिवार एवं आर्य समाज की अपूर्णीय क्षति हुई है। श्री देवेन्द्र सहारण का जन्म ग्राम–जुलानी, जिला–जीन्द हुआ था किन्तु वर्तमान समय में जीन्द शहर में अपने परिवार के साथ रहते थे। राजकीय विद्यालय में सेवारत अध्यापक थे और आर्य समाज की गतिविधियों में सक्रिय सहयोग करते थे। उनके पिता स्व. श्री मा. सत्यवीर सिंह जी स्वामी रामवेश जी के साथ मिलकर कार्य करते थे। अपने पिता से मिले संस्कारें के अनुरूप स्व. श्री देवेन्द्र सहारण भी एक कर्मठ कार्यकर्ता के रूप में आर्य समाज से जुड़ गये थे। वे अपने पीछे अपनी पत्नी व इकलौते पुत्र को छोड़ गये हैं। उनके असमय निधन से सभी लोग स्तब्ध रह गये और किसी को भी यह विश्वास नहीं हो पाया कि उनका निधन हो चुका है, क्योंकि वे स्वस्थ एवं सक्रिय व्यक्ति थे। प्रसन्नचित्त रहना, निरन्तर कार्य करते रहना उनकी दिनचर्या में शामिल था। किसी शायर ने कहा है कि

क्या गजब हो जजबाये दिल, ग़र यह अन्जाम हो जाये।
मुशाफिर हो राहे मंजिल, और शाम हो जाये।।

अर्थात् जिस मुशाफिर की मंजिल आने से पहले सूर्य ढल जाये शाम हो जाये तो उस मुशाफिर पर क्या गुजरती है। अर्थात् वह जिस मंजिल को पाना चाहता था उससे पहले ही रात हो गई और वह मंजिल पा न सका। इसी प्रकार श्री देवेन्द्र सहारण भी जीवन के आधे पड़ाव तक ही पहुंचे थे और वे सदा–सदा के लिए विदा हो गये। जीवन का यह रहस्य ईश्वर के सिवाय कोई नहीं जानता। श्री देवेन्द्र सहारण की अन्त्येष्टि में स्वामी आर्यवेश जी व स्वामी आदित्यवेश जी सम्मिलित हुए और उनके परिजनों को दुःख की इस घड़ी में ढांढस बंधाया। अन्त्येष्टि के समय हजारों नम आंखों ने उन्हें अन्तिम विदाई दी। इससे उनकी लोकप्रियता और व्यवहार कुशलता का साक्षात् परिचय मिल रहा था। उनके शांति यज्ञ में बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय अध्यक्ष बहन पूनम आर्या एवं संयोजक बहन प्रवेश आर्या ने सम्मिलित होकर यज्ञ सम्पन्न कराया और अपने प्रवचनों से दिवंगत आत्मा के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की और परिवारजनों को सांत्वना प्रदान की। श्री देवेन्द्र सहारण के अन्तरंग मित्रों में सर्वश्री सज्जन सिंह राठी–कार्यकारी प्रधान सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् हरियाणा, श्री अशोक आर्य–महामंत्री, मा0 अजीतपाल, मा0 प्रदीप कुमार, श्री ऋषिराज शास्त्री, श्री जगफूल सिंह ढिल्लों, श्री सौरव भारद्वाज, श्री गोल्ड आदि भी अन्त्येष्टि एवं शोक सभा में उपस्थित रहे। स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी रामवेश जी व स्वामी आदित्यवेश जी ने भावभीनी श्रद्धांजलि देकर दिवंगत आत्मा की शांति एवं सद्गति की प्रार्थना की।

सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद हिसार के महासचिव श्री बलवंत आर्य को मातृ शोक

आर्य समाज नियाणा, जिला हिसार के पूर्व प्रधान स्वर्गीय श्री मनीराम आर्य की धर्मपत्नी, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद हिसार के महासचिव श्री बलवंत आर्य की पूज्या माता धर्मनिष्ठ, सुसंस्कारित एवं समाजसेवा को समर्पित श्रीमती चन्द्र देवी जी का दिनांक 9 जनवरी, 2026 को आकस्मिक देहावसान हो गया। उनका जन्म 25 मार्च, 1943 को हुआ था। श्रीमती चन्द्र देवी एक आदर्श आर्य नारी थीं। उन्होंने अपना संपूर्ण जीवन वैदिक मूल्यों, सादगी, त्याग, कर्तव्यबोध और पारिवारिक एवं सामाजिक उत्तरदायित्वों के निर्वहन में समर्पित किया। वे परिवार को संस्कार देने वाली, समाज को दिशा देने वाली तथा आर्य समाज के सिद्धांतों को जीवन में उतारने वाली प्रेरणास्रोत थीं। उनका आचरण एवं जीवनशैली आर्य नारीत्व का जीवंत उदाहरण रहा।

इस दुःखद अवसर पर शोक प्रकट करने हेतु सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय महासचिव स्वामी आदित्यवेश, प्रदेश अध्यक्ष श्री दलबीर आर्य, प्रदेश प्रवक्ता श्री प्रदीप कुमार, गुरुकुल धीरणवास से कैप्टन सुबेसिंह, श्री जयवीर सोनी, श्री जोगेंद्र सिंह, श्री कुलदीप कुमार'एवं श्री श्याम सैनी सहित अनेक गणमान्य आर्यजन उपस्थित रहे।

स्व.श्रीमती चन्द्र देवी
25-03-1943 09-01-2026

स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि माता चन्द्र देवी धर्मपरायण, संयमी एवं आदर्श जीवन जीने वाली माता थीं। स्वामी आदित्यवेश ने कहा कि माता जी के संस्कारों और प्रेरणा के कारण ही उनके बेटे श्री बलवंत आर्य एवं डॉ. दयानन्द आर्य, डॉ. उमेद सिंह एवं बेटी रामरती देवी सहित परिवार के सभी सदस्य समाजसेवा और राष्ट्रहित के कार्यों में निरंतर सक्रिय हैं।

दिवंगत आत्मा की शांति हेतु बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय अध्यक्ष बहन पूनम आर्या द्वारा शांति यज्ञ संपन्न कराया गया, जिसमें सार्वदेशिक आर्या युवती परिषद की राष्ट्रीय अध्यक्षा बहन प्रवेश आर्या की गरिमामयी उपस्थिति रही। ईश्वर दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान करें तथा शोकाकुल परिवार को इस दुःख को सहन करने की शक्ति दें।

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व सम्पादक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा मुद्रक - थॉमस पुलटू एवं मुद्रणालय - ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से मुद्रित। (दूरभाष : 011-23274771, 42415359)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।